PRGI : APHIN/26/A3657

पेन पॉवर

हिंदी दैनिक समाचार पत्र

वर्ष - 1 अंक - 42 रविवार, अगस्त 23, 2026 विशाखापट्टनम संपादकः गंट्यादा अप्पाराव पृष्ठों. 4 मूल्य. 1रु

इस साल 3,000 और शिक्षक पदों पर होगी भर्तीः मंत्री लोकेश

(पेन पॉवर न्यूज): विजयनगरम, 22 अगस्त : आंध्र प्रदेश के शिक्षा, आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्री नारा लोकेश ने घोषणा की कि इस साल डीएससी के माध्यम से 3,000 और शिक्षक पदों पर भर्ती की जाएगी। उन्होंने बताया कि शिक्षा मंत्री के रूप में जिम्मेदारी संभालने के बाद राज्य के 10,000 स्कूलों में 'वन क्लासदृ वन टीचर' व्यवस्था लागू की गई है। उन्होंने कहा कि डीएससी के माध्यम से अब तक 16,000 शिक्षक पदों पर भर्ती की जा चुकी है।

लोकेश ने कहा कि आंध्र प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को देश में नंबर–1 बनाना उनका लक्ष्य है। इसके लिए शिक्षकों, अधि ाकारियों और जनप्रतिनिधियों से मिलकर काम करने का आह्वान किया।

शनिवार को मंत्री लोकेश ने विजयनगरम के दासन्नपेटा स्थित जिला परिषद बालिका उच्च विद्यालय में शिक्षकों की क्लस्टर स्कूल कॉम्प्लेक्स बैठक में भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध यम से राज्यभर के शिक्षकों से बातचीत की।

शिक्षकों को सीखने के परिणामों पर ध्यान देना चाहिए

मंत्री लोकेश ने कहा कि शिक्षा व्यवस्था में सरकार द्वारा किए गए सुधार पूरे हो चुके हैं। अब सभी शिक्षकों को पूरी तरह लर्निंग आउटकम्स यानी विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि वह हर महीने क्लस्टर कॉम्प्लेक्स बैठक में शामिल होकर शिक्षकों की जमीनी स्तर की समस्याओं को जानेंगे। उन्होंने बताया कि सुधारों के कारण पिछले साल शानदार परिणाम मिले हैं, लेकिन यह केवल पहला कदम है। उन्होंने 100 प्रतिशत परिणाम हासिल करने पर ध्यान केंद्रित करने का निर्देश दिया।

उन्होंने शिक्षकों को नवीन कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों को बिना तनाव के विभिन्न कौशल सिखाने की सलाह दी।

'युवागलम' पदयात्रा के दौरान आया सुधारों का विचार

लोकेश ने बताया कि 'युवागलम' पदयात्रा के दौरान जब वह कुरनूल जिले में घूम रहे थे, तब उन्होंने रोजगार की तलाश में अपने बच्चों के साथ पलायन करने वाले परिवारों को देखा था।

उन्होंने कहा, "मैंने स्कूलों में शिक्षकों की कमी देखी। तभी मैंने शिक्षा क्षेत्र में सुधार लाने का फैसला किया। मेरे कई करीबी लोगों ने पूछा कि मैंने इतनी चुनौतीपूर्ण शिक्षा विभाग की जिम्मेदारी क्यों ली। मैं ऐसा व्यक्ति हूं जो मानता है कि समाज में बदलाव केवल शिक्षा के माध्यम से लाया जा सकता है।" उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूलों में आने वाले विद्यार्थियों, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों की पृष्ठभूमि अलग–अलग होती है और उनकी विशेष देखभाल करना शिक्षकों की जिम्मेदारी है। लोकेश ने कहा कि विशाखापत्तनम में एक निजी स्कूल के शिक्षक द्वारा एक बच्चे के साथ मारपीट किए जाने और बाद में बच्चे की मौत की दुखद घटना ने उन्हें गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने कहा

कि बच्चों की आंखों के तारे की तरह देखभाल करना शिक्षकों की जिम्मेदारी है।

उन्होंने कहा कि समय बदल चुका है और अब विद्यार्थी सवाल पूछने लगे हैं। क्रिटिकल और एनालिटिकल थिंकिंग, असेसमेंट, पाठ्यक्रम में बदलाव और बेहतरीन शिक्षण पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए क्लस्टर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों को गारंटीड फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी उपलब्ध कराना सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने शिक्षकों को समेटिव और फॉर्मेटिव टेस्ट तथा विद्यार्थियों के परिणामों पर ध्यान देने की सलाह दी।

हर शनिवार 'नो बैग डे' घोषित

लोकेश ने बताया कि राज्य के श्रेष्ठ शिक्षकों को सिंगापुर और फिनलैंड भेजा गया है। वहां शिक्षकों द्वारा सीखी गई बेहतरीन शिक्षण पद्धतियों को राज्य में लागू करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हर शनिवार को 'नो बैग डे' घोषित किया गया है। उन्होंने दोहराया कि पिछले साल हासिल किए गए शानदार परिणाम केवल पहला कदम हैं। प्रत्येक शिक्षक को 100 प्रतिशत परिणाम हासिल करने के लक्ष्य के साथ काम करना चाहिए।

उन्होंने कहा, "बच्चे आनंददायक और खेल–कूद वाले माहौल में पढ़ें, यही मेरी सोच है। हमारी सोच और नीतियां पूरी तरह विद्यार्थी–केंद्रित होनी चाहिए।"

लोकेश ने प्रत्येक शिक्षक से स्म।च ऐप में अपने सुझाव दर्ज करने को कहा। उन्होंने शिक्षकों से क्रिएटिव क्लब, लीडरशिप क्लब, लैंग्वेज क्लब, मैथ्स एवं साइंस क्लब, ग्रीन क्लब, स्पोर्ट्स क्लब और एंटी–ड्रग्स क्लब (ईगल क्लब) पर ध्यान देने का आग्रह किया।

मंत्री नारा लोकेश का वाईएसआरसीपी पर हमला, टीडीपी कैडर को अहम निर्देश

(पेन पॉवर न्यूज): विजयनगरम, 22 अगस्तः टीडीपी के विधानसभा क्षेत्र स्तरीय कैडर बैठक में मंत्री नारा लोकेश ने वाईएसआरसीपी पर तीखा हमला बोला। उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी पर तंज कसते हुए कहा कि जिसे डीएससी और एपीपीएससी के बीच का अंतर तक नहीं पता, वह मुख्यमंत्री कैसे बन गए, यह उनकी समझ से परे है।

लोकेश ने वाईएसआरसीपी को 'कुल्हाड़ी पार्टी' बताते हुए आरोप लगाया कि वह कहती कुछ है और करती कुछ और है। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछली वाईएसआरसीपी सरकार के दौरान कई टीडीपी नेताओं और कार्यकर्ताओं के खिलाफ अवैध मामले दर्ज कर उन्हें परेशान किया गया। उन्होंने स्पष्ट किया कि टीडीपी कार्यकर्ताओं के खिलाफ जहां–जहां अवैध मामले दर्ज किए गए हैं, उन सभी मामलों को रद्द किया जाएगा।

लोकेश ने कहा कि वाईएसआरसीपी एक बार फिर सत्ता में आने की कोशिश कर रही है, लेकिन टीडीपी के सभी कार्यकर्ताओं को एकजुट होकर काम करना चाहिए। उन्होंने कहा, "रेड बुक अपना काम करती रहेगी।"

मंत्री नारा लोकेश ने कहा कि यदि टीडीपी लगातार तीन कार्यकाल तक सत्ता में रहती है, तभी राज्य में विकास की गति और तेज होगी। उन्होंने पार्टी के प्रत्येक कार्यकर्ता से स्थानीय निकाय चुनावों में टीडीपी की जीत के लक्ष्य के साथ कड़ी मेहनत करने का आह्वान किया।

उन्होंने पार्टी को जमीनी स्तर पर और मजबूत करने के लिए नेताओं और कार्यकर्ताओं से समन्वय के साथ आगे बढ़ने की अपील की। कैडर बैठक के बाद नारा लोकेश ने वर्ष 2023–24 में 'भविष्य की गारंटी' कार्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करने और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 100 टीडीपी कार्यकर्ताओं को प्रशंसा पत्र प्रदान किए।

उन्होंने कहा कि पार्टी के लिए मेहनत करने वाले कार्यकर्ताओं को पहचानकर प्रोत्साहित करने से कैडर में और अधिक उत्साह बढ़ेगा।

अंतरराज्यीय चोर गिरफ्तार, ३० लाख रुपये के सोने के आभूषण बरामद

तिरुवूर, 22 अगस्तः तिरुवूर ग्रामीण डीसीपी बी. लक्ष्मी नारायण ने बताया कि बंद मकानों को निशाना बनाकर लगातार चोरी करने वाले अंतरराज्यीय चोर चिंतला गोपाल राव को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उसके पास से 30 लाख रुपये मूल्य के सोने के आभूषण और 2,000 रुपये नकद बरामद किए गए हैं।

शनिवार को तिरुवूर सर्किल कार्यालय में पत्रकारों से बात करते हुए डीसीपी ने बताया कि पुट्रेला के पास स्कूटर से जा रहे आरोपी गोपाल राव को पुलिस ने हिरासत में लिया।

उन्होंने बताया कि सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ के दौरान गोपाल राव ने इन चोरियों में शामिल होने की बात स्वीकार की। डीसीपी ने बताया कि वह ए. कोंडूरु, विस्सन्नपेटा और तिरुवूर मंडलों में बंद मकानों को निशाना बनाकर लगातार चोरी कर रहा था। डीसीपी लक्ष्मी नारायण ने बताया कि आरोपी तेलंगाना के सूर्यापेट जिले के कोदाड का रहने वाला है। 10 अगस्त को ए. कोंडूरु मंडल के चीमलापाडु, विस्सन्नपेटा मंडल के कलगरा और तिरुवूर मंडल के मल्लेला गांवों में लगातार चोरी की घटनाएं हुई थीं।

युवाओं से ही 'विकसित भारत' संभवः गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत

विजयवाड़ा, 22 अगस्तः गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने कहा कि आज के युवा ही विकसित भारत के लाभार्थी हैं। उन्होंने विजयवाड़ा में भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा आयोजित युवा सम्मेलन में भाग लेकर संबोधित किया। उन्होंने कहा कि युवाओं को राजनीति में आना चाहिए या नहीं, यह एक बड़ा सवाल है। उन्होंने सुझाव दिया कि युवाओं को 40 वर्ष की उम्र के बाद राजनीति में आना चाहिए। उन्होंने कहा कि पहले अनुभव और स्थिरता जरूरी है और उसके बाद राजनीति में कदम रखना चाहिए। उन्होंने युवा शक्ति, नारी शक्ति, किसान शक्ति और गरीब कल्याण को विकसित भारत के चार स्तंभ बताया। उन्होंने कहा कि पहले बहुत से लोगों के पास बैंक खाते नहीं थे, लेकिन मोदी सरकार ने उन्हें जनधन खाते उपलब्ध कराए। गोवा के मुख्यमंत्री ने कहा कि अब 5ळ कनेक्टिविटी उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के नेतृत्व में भारत विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत का लक्ष्य युवाओं के माध यम से ही हासिल किया जा सकता है और बताया कि भारत की 50 प्रतिशत आबादी युवा है। सावंत ने कहा कि आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू के पास अमरावती और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर स्पष्ट विजन है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक ज्ञान रखने वाले युवाओं की बहुत आवश्यकता है। युवाओं में नीतियां बनाने और परिणाम हासिल करने की क्षमता होनी चाहिए। उन्होंने भविष्य के उद्यमियों, नीति–निर्माताओं और राजनेताओं के रूप में युवाओं को आगे आते देखने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि युवा जिम्मेदार, देश के लिए काम करने वाले और पारदर्शी आचरण वाले होने चाहिए।

युवाओं को राजनीति के बारे में सोचना चाहिएः माधव

भाजपा आंध्र प्रदेश अध्यक्ष पीवीएन माधव ने कहा कि 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाना चाहिए। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को साकार करने के लिए काम करने का आह्वान किया और युवाओं से देश की राजनीति के बारे में सोचने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राजनीतिक सफर सभी के लिए प्रेरणादायक है। माधव ने कहा कि मोदी ने हवाई, सड़क और जल कनेक्टिविटी को विकसित किया है तथा गरीब और कमजोर वर्गों के सामाजिक विकास के लिए काम किया है।

'विलेज इंटेलिजेंस' ।P से भी मजबूतः सुजाना चौधरी

विधायक सुजाना चौधरी ने कहा कि आज के युवा हर क्षेत्र में काफी आगे हैं। उन्होंने कहा कि टP का अर्थ 'विलेज इंटेलिजेंस' है और यह ।P से भी ज्यादा मजबूत है। उन्होंने कहा कि भP यानी ह्यूमन इंटेलिजेंस और चP यानी पॉलिटिकल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में भी भारतीय काफी बेहतर हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का लक्ष्य 2047 तक भारत को पूरी तरह विकसित राष्ट्र बनाना है। चौध री ने विद्यार्थियों से राजनीतिक नेता बनने के बारे में सोचने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक विकास से जुड़े मुद्दों पर विचार करना चाहिए। उन्होंने युवाओं को पब कल्चर के बजाय स्वस्थ और रचनात्मक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी।

जॉब कैलेंडर के जरिए युवाओं के साथ सरकारः मंत्री पार्थसारथी

(पेन पॉवर न्यूज): अमरावती, 22 अगस्तः राज्य के सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री के. पार्थसारथी ने कहा कि गठबंधन सरकार युवाओं के भविष्य और राज्य के विकास को अपना लक्ष्य बनाकर काम कर रही है।

उन्होंने कहा कि सरकार हर साल जॉब कैलेंडर जारी कर युवाओं का साथ दे रही है।

उन्होंने कहा कि राज्य के प्रशासन में एपीपीएससी के माध्यम से चयनित अधि ाकारियों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। शनिवार को राजधानी अमरावती में पत्रकारों से बातचीत करते हुए मंत्री पार्थसारथी ने गठबंध ान सरकार द्वारा आयोजित मेगा डीएससी को लेकर वाईएसआरसीपी की आलोचनाओं का जवाब दिया।

उन्होंने वाईएसआरसीपी नेताओं पर तीखा हमला करते हुए आरोप लगाया कि पिछली सरकार के दौरान एपीपीएससी में हुई अनियमितताओं से जनता का ध्यान भटकाने के लिए ही गठबंधन सरकार द्वारा पारदर्शी तरीके से आयोजित मेगा डीएससी पर झूठे आरोप लगाए जा रहे हैं।

वाईएसआरसीपी नेताओं पर तंज कसते हुए उन्होंने कहा कि कुल्हाड़ी के वार और दिल के दौरे में जितना अंतर होता है, उतना ही अंतर पिछली वाईएसआरसीपी सरकार के एपीपीएससी और वर्तमान गठबंधन सरकार द्वारा आयोजित मेगा डीएससी में है। उन्होंने कहा कि 'कुल्हाड़ी पार्टी' चाहे कितना भी प्रयास कर ले, वह मेगा डीएससी में एक भी अनियमितता साबित नहीं कर पाई।

पार्थसारथी ने व्यंग्य करते हुए कहा कि हाईकोर्ट द्वारा एपीपीएससी में हुई अनियमितताओं की ओर इशारा किए जाने के बावजूद पूर्व मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी ऐसे बयान दे रहे हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो।

उन्होंने कहा कि मेगा डीएससी को लेकर सैकड़ों मामले दर्ज करने वाली 'कुल्हाड़ी पार्टी' अदालत के सामने एक भी सबूत पेश नहीं कर पाई। उन्होंने दावा किया कि हाईकोर्ट ने भी मेगा डीएससी के खिलाफ दायर किए जा रहे मामलों के पीछे साजिश का कोण होने पर पार्टी को फटकार लगाई है।

मंत्री ने बताया कि सामान्य तौर पर सरकारी परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं को कड़ी सुरक्षा के बीच स्ट्रांग रूम में रखा जाता है।

लेकिन उन्होंने आरोप लगाया कि वाईएसआरसीपी शासन के दौरान एपीपीएससी परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं को बिना उचित सुरक्षा के एक निजी रिसॉर्ट में रखा गया था। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि इन उत्तर पुस्तिकाओं की जांच अयोग्य लोगों से कराई गई।

उन्होंने कहा कि वाईएसआरसीपी शासन के दौरान ग्रुप–1 परीक्षा की पूरी प्रक्रिया एपीपीएससी के चेयरमैन या आयोग की मंजूरी के बिना ही आयोजित की गई।

मंत्री पार्थसारथी ने याद दिलाया कि नियम 17, क्लॉज 19 के अनुसार एपीपीएससी द्वारा की जाने वाली किसी भी प्रक्रिया के लिए आयोग के चेयरमैन की मंजूरी अनिवार्य है। उन्होंने 'कुल्हाड़ी पार्टी' के प्रमुख वाई.एस. जगन से पूछा कि वर्षों से चली आ रही नियमावली को दरकिनार कर डिजिटल मूल्यांकन क्यों कराया गया।

उन्होंने आरोप लगाया कि वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी इस भ्रम में जी रहे हैं कि जनता भोली है और वह जो कुछ भी कहेंगे, लोग उस पर विश्वास कर लेंगे।

पार्थसारथी ने बताया कि एपीपीएससी में कथित अनियमितताओं की व्यापक जांच के लिए हाईकोर्ट ने स्वयं विशेष जांच दल का गठन किया था। उन्होंने कहा कि डिजिटल मूल्यांकन के लिए न्यूनतम मानक संचालन प्रक्रिया तक तैयार नहीं की गई थी। उन्होंने आरोप लगाया कि एपीपीएससी के नियमों के विरुद्ध व्हाइटनर का इस्तेमाल कर सभी उत्तर पुस्तिकाओं में बदलाव किए गए।

मंत्री पार्थसारथी ने 'कुल्हाड़ी पार्टी' के नेताओं को खुली चुनौती देते हुए पूछा कि क्या वे हाईकोर्ट द्वारा गठित एसआईटी की रिपोर्ट पर सार्वजनिक बहस के लिए तैयार हैं।

उन्होंने जनता से वाईएसआरसीपी द्वारा 'बटन दबाने' की राजनीति की आड़ में किए गए कथित अनियमितताओं पर ध्यान देने की अपील की। उन्होंने वाईएसआरसीपी नेताओं से सवाल किया कि यदि जानबूझकर अनियमितताएं नहीं की गई थीं, तो डुप्लीकेट ओएमआर शीट क्यों बनाई गईं?

संपादकीय

ताकि बचा रहे बचपन

जिस पश्चिमी दुनिया में सोशल मीडिया का आविष्कार हुआ, जिन्होंने कभी अरब देशों में क्रांति के लिए सोशल मीडिया की सराहना की थी, अब उन्हें ही यह माध्यम अपने ही बच्चों का दुश्मन लगने लगा है। इसकी वजह है, वहां के बच्चों और किशोरों का बिगड़ता मानसिक स्वास्थ्य और पढ़ाई का गिरता स्तर। किशोरों और बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए यूरोप के कई देशों ने पंद्रह या सोलह साल से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर पाबंदी लगानी शुरू कर दी है। इसका अगुआ होने का श्रेय ऑस्ट्रेलिया को है, जिसने 16 साल से कम उम्र के बच्चों के इंस्टाग्राम, फेसबुक, टिकटॉक, एक्स यानी ट्विटर और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्मों के इस्तेमाल पर पाबंदी लगा दी है। इसी तरह फ्रांस ऐसा कानून बनाने वाला यूरोप का पहला देश हो गया है। वहां की संसद ने पंद्रह साल तक के बच्चों के सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर रोक लगाने का कानून पारित कर दिया है। हालांकि यह कानून खटाई में पड़ गया है। फ्रांस के सर्वोच्च न्यायालय ने इस कानून को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन माना है। अदालत का कहना है कि नाबालिगों पर प्रतिबंध लगाने के चक्कर में यह कानून असल में हर नागरिक पर सोशल मीडिया का उपयोग करने से पहले अपनी उम्र साबित करने का दबाव बनाता है। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैंक्रो इस इस कानून के प्रबल समर्थक हैं। अदालत के फैसले के बाद उन्होंने कहा है कि इस कानून को लागू करने के लिए अदालती फैसले के मद्देनजर जरूरी सुधार करके फिर से इसे संसद से पारित कराया जाएगा। फ्रांस के इस फैसले से स्पष्ट है कि वह किशोरों के सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर लगाम लगाने के लिए पीछे नहीं हटने जा रहा है। जिस पश्चिमी दुनिया में सोशल मीडिया का आविष्कार हुआ, जिन्होंने कभी अरब देशों में क्रांति के लिए सोशल मीडिया की सराहना की थी, अब उन्हें ही यह माध्यम अपने ही बच्चों का दुश्मन लगने लगा है। इसकी वजह है, वहां के बच्चों और किशोरों का बिगड़ता मानसिक स्वास्थ्य और पढ़ाई का गिरता स्तर। इसकी वजह से अमेरिका तक में सोशल मीडिया कंपनियों के खिलाफ लोगों में नाराजगी दिख रही है। प्रसिद्ध न्यूज एजेंसी रायटर्स ने आईपोस कंपनी के साथ हाल ही में एक सर्वे किया है। इसमें शामिल 61 फीसद लोगों ने कहा कि सोशल मीडिया कंपनियों पर सरकार को और सख्त निगरानी रखनी चाहिए। इस सर्वे में शामिल 66 प्रतिशत लोग तो 16 साल से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया इस्तेमाल पर रोक लगाने के लिए उम्र के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया लागू करने पर जोर दिया है। वैसे अमेरिका के फ्लोरिडा जैसे कुछ राज्यों में चौदह साल से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया इस्तेमाल पर रोक है। दुनियाभर में बच्चों और किशोरों के सोशल मीडिया इस्तेमाल पर रोक के लिए उनके मानसिक स्वास्थ्य में आ रही गिरावट और बढ़ते मानसिक तनाव को जिम्मेदार माना जा रहा है। कई शोधों से पता चला है कि लगातार स्क्रीन देखने और सोशल मीडिया के इस्तेमाल से बच्चे दूसरों की लाइफस्टाइल से खुद की तुलना करने लग रहे हैं। इससे उनमें हीन भावना, तनाव और डिप्रेशन बढ़ रहा है। इसकी वजह से उनकी नींद में कमी हो रही है। देर रात तक फोन चलाने के कारण भी बच्चों की सोने की आदत बिगड़ रही है। इससे उनमें चिड़चिड़ाहट बढ़ रही है। जिससे उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ रहा है। जानकारों का मानना है कि सोशल मीडिया ऐप्स का अलगोरिदम ऐसा है, जिससे बच्चे ही नहीं, बड़े भी उसके लत का शिकार हो रहे हैं. इससे वे स्क्रीन के आदी हो रहे हैं। कई बार कम उम्र के बच्चों के सामने आत्महत्या, हिंसा या उम्र के हिसाब से गलत सामग्री भी आती है। वैसे सोशल मीडिया का अलगोरिदम ऐसा है कि नकारात्मक, हिंसा प्रधान और सेक्स से जुड़ी खबरें और दृश्य जल्दी वायरल होते हैं। सोशल मीडिया ट्रोलिंग और अभद्र टिप्पणियों का बड़ा और आसान माध्यम बन गया है। इनकी वजह से बच्चे मानसिक प्रताड़ना का शिकार हो रहे हैं। बच्चों को फंसाने वाले अपराधी उन्हे आसानी से अपना शिकार बना लेते हैं। इसीलिए दुनिया में कई देशों की सरकारें बच्चों के लिए सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर रोक लगाने की तैयारी में हैं। रोक लगाने वालों में इंडोनेशिया भी शामिल हो चुका है, जिसने मार्च 2026 से इसके नियम लागू कर दिए हैं। इनके अनुसार, 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए यूट्यूब, टिकटॉक, फेसबुक और रोब्लॉक्स जैसे हाई-रिस्क प्लेटफॉर्म्स पर पाबंदी लगा दी गई है। इंडोनेशिया की तरह मलयेशिया ने भी ऑनलाइन सुरक्षा अधिनियम के तहत 16 साल से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया अकाउंट बनाने पर रोक लगा रखी है। संयुक्त अरब अमीरात ने बच्चों के लिए सोशल मीडिया के लिए न्यूनतम उम्र 15 वर्ष तय की है। इससे कम उम्र के बच्चों के अकाउंट बनाने पर यहां पूरी तरह रोक है। यूरोप के देश डेनमार्क में 15 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया ब्लॉक करने का कानून बन चुका है। बच्चों की उम्र की जांच के लिए सरकार डिजिटल एविडेंस ऐप पर काम कर रही है। इसी तरह ब्रिटेन की सरकार ने भी 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है, जो जनवरी 2027 से प्रभावी होने जा रही है। तुर्की में भी 15 साल से कम उम्र के बच्चों को सोशल मीडिया से दूर रखने के लिए कानून को मंजूरी मिल चुकी है, जिसे 2026 के अंत तक लागू किया जाना है। चीन में किशोरों के लिए सोशल मीडिया पर पूरी तरह पाबंदी तो नहीं है, लेकिन उनके लिए सख्त 'माइनर मोड' लागू है, जो रात के समय सोशल मीडिया ऐप्स के इस्तेमाल और स्क्रीन टाइम को सीमित करता है। ब्राजील का बाल एवं किशोर डिजिटल कानून 17 मार्च, 2026 से लागू हो चुका है। जिसके तहत 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों को अपने सोशल मीडिया खाते को माता-पिता या कानूनी अभिभावक से जोड़ना अनिवार्य है। इसके अलावा, यह कानून युवाओं के लगातार स्क्रॉल जैसी आदतों पर प्रतिबंध लगाता है। जर्मनी में भी इसी तरह का नियम लागू हो चुका है। स्वीडन समेत कई अन्य देश भी ऐसी तैयारी में हैं। अपने यहां कर्नाटक राज्य भी ऐसे कानून पर काम कर रहा है। जबकि नोएडा के जिला प्रशासन ने स्कूलों में ऑनलाइन के इस्तेमाल को सीमित करने का निर्देश दिया है। विदेशों की तुलना में जरा भारत को देखिए, यहां दिल्ली के जंतर-मंतर पर युवाओं और किशोरों ने जिस तरह अभद्र और अश्लील गालियों का कैमरे के सामने प्रदर्शन किया, उसे सोशल मीडिया के जरिए पूरी दुनिया ने देखा है। दिलचस्प है कि इसे प्रगतिशील बौद्धिकों के एक वर्ग ने समर्थन किया। दो राय नहीं कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल अगर सही तरीके से किया जाए तो उसकी पहुंच और त्वरा समाज को कई तरह के फायदे दिला सकती है। खामियां उजागर करके तंत्र पर दबाव बनाया जा सकता है। लेकिन हमें यह स्वीकार करने की हिचक नहीं होनी चाहिए कि देश में सोशल मीडिया अर्धनग्नता और अश्लीलता का वाहक बनता जा रहा है। इन्फ्लूएंसर बनने, रीच बढ़ाने और लाइक के जरिए कमाई के चक्कर में शरीफ परिवारों की महिलाओं को भी अंग प्रदर्शन से परहेज नहीं रहा। सोशल मीडिया के लिएकोई सेंसर नीति न होने की वजह से सबकी पहुंच किशोरों और बच्चों तक हो रही है। इसलिए भी जरूरी है कि पश्चिम की तरह अपने यहां भी इस पर ध्यान दिया जाए और महामारी बनने से पहले इस पर लगाम लगाने की कोशिश शुरू हो। नियमों का उल्लंघन करने पर सोशल मीडिया कंपनियों पर भारी जुर्माना लगाया जाता है। दिसंबर 2010 में ट्यूनिशिया से शुरू लोकतंत्र समर्थक लहर सोशल मीडिया के इतिहास का निर्णायक बिंदु है। सोशल मीडिया के सहारे यह लहर काहिरा के तहरीर चौक से सीरिया और लीबिया होते हुए समूचे अरब जगत में फैल गई। इतिहास में इस लहर को अरब स्प्रिंग यानी अरब का बसंत और पिंक रिवोल्यूशन या गुलाबी क्रांति के रूप में दर्ज है। अरब देशों में बदलाव लाने की सोच के विस्तार के पीछे सोशल मीडिया को बड़ा जरिया माना गया। लंबे यूरोपीय शासन और शिक्षा-दीक्षा के चलते भारतीय मानस अपनी सांस्कृतिक जड़ों और मूल्यों से कहीं ज्यादा प्रभावित है। इसलिए भारत में सोशल मीडिया पर ऑस्ट्रेलिया और दूसरे पश्चिमी देशों जैसे सवाल नहीं उठे। अगर इन देशों से पहले यहां सवाल उठते तो उसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला बता दिया जाता। बहरहाल उम्मीद की जानी चाहिए कि हम भी पश्चिमी देशों से सबक लेंगे और अपने यहां के बचपन को स्वस्थ रखने और बचाने की कोशिश जरूर करेंगे।

क्या कैप्टन ने सरकार के 'कप्तान' पर ही सवाल उठा दिये हैं?

अपने आलेख में कैप्टन अमरिंदर सिंह ने साफ तौर पर कहा है कि नरेंद्र मोदी के दौर ने भारतीय राजनीति और शासन की दिशा बदल दी है। उनके अनुसार, मोदी ने भारतीय जनता पार्टी को राजनीति के एक सीमित दायरे से निकालकर देशव्यापी शक्ति में बदला। पंजाब विधानसभा चुनावों से पहले राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता कैप्टन अमरिंदर सिंह ने व्यक्ति-केंद्रित राजनीति पर सवाल उठाते हुए एक बड़ा राजनीतिक सवाल दागा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और पिछले एक दशक की उपलब्धियों को स्वीकार करते हुए कैप्टन ने अंग्रेजी समाचार-पत्र में अपने आलेख के जरिए यह संकेत दिया है कि अब भाजपा और देश की राजनीति को सिर्फ एक नाम और एक व्यक्ति के इर्द-गिर्द सिमटने की बजाय मजबूत संस्थाओं, जवाबदेही और स्थायी लोकतांत्रिक ढांचे की ओर बढ़ना चाहिए। एक तरह से कैप्टन ने भाजपा को भी सलाह दे डाली है कि मोदी-इज़्म की अगली मंजिल केवल मोदी के नाम पर आगे बढ़ना नहीं, बल्कि ऐसी संस्था-केंद्रित व्यवस्था खड़ी करना होनी चाहिए, जो किसी एक नेता से परे जाकर देश की राजनीतिक और प्रशासनिक ताकत को स्थायी आधार दे सके। अपने आलेख में कैप्टन अमरिंदर सिंह ने साफ तौर पर कहा है कि नरेंद्र मोदी के दौर ने भारतीय राजनीति और शासन की दिशा बदल दी है। उनके अनुसार, मोदी ने भारतीय जनता पार्टी को राजनीति के एक सीमित दायरे से निकालकर देशव्यापी शक्ति में बदला। डिजिटल सार्वजनिक ढांचे, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण, वित्तीय समावेशन, स्वच्छता, आवास, बिजली और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में हुए कामों का उल्लेख करते हुए उन्होंने माना कि मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि सरकार की पहुंच और डिलीवरी क्षमता का विस्तार रही है। लेकिन कैप्टन का असली संदेश इससे आगे जाता है। उनका तर्क है कि किसी भी लोकतंत्र की सफलता को केवल एक शक्तिशाली नेता की उपलब्धियों से नहीं मापा जा सकता। मजबूत सरकार और मजबूत नेता महत्वपूर्ण हैं, लेकिन लोकतंत्र की असली मजबूती मजबूत संस्थाओं, जवाबदेही और संवैधानिक संतुलन से आती है। उन्होंने सवाल उठाया कि मोदी-इज़्म की अगली यात्रा आखिर किस दिशा में होगी? क्या वह एक व्यक्ति के नेतृत्व के इर्द-गिर्द सीमित रहेगा या फिर ऐसी संस्थागत व्यवस्था खड़ी करेगा, जो किसी भी व्यक्ति के सत्ता से हटने के बाद भी देश को आगे बढ़ाती रहे? यहीं से कैप्टन अमरिंदर सिंह का आलेख राजनीतिक रूप से और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। भाजपा के वरिष्ठ नेता होते हुए भी उन्होंने संसद की भूमिका, संसदीय समितियों की जांच, संघीय विमर्श, संवैधानिक संस्थाओं की स्वायत्तता और नागरिक अधिकारों जैसे मुद्दों को खुलकर उठाया है। उनका कहना है कि लोकतंत्र केवल नियमित चुनावों का नाम नहीं है। चुनावी जीत किसी सरकार को जनादेश जरूर देती है, लेकिन लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती इस बात पर निर्भर करती है कि सत्ता के इस्तेमाल पर संस्थागत नियंत्रण कितना प्रभावी है। कैप्टन ने विशेष रूप से

संसद की समितियों और संसदीय जांच की भूमिका पर जोर दिया है। उनके अनुसार, बड़े फैसलों से पहले गंभीर विचार-विमर्श और समितियों की जांच को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। संघीय ढांचे के सवाल पर भी उनका संकेत साफ है कि केंद्र और राज्यों के बीच शक्ति संतुलन तथा संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता लोकतंत्र की दीर्घकालिक मजबूती के लिए जरूरी है। उनका एक और महत्वपूर्ण तर्क कल्याणकारी योजनाओं को लेकर है। कैप्टन अमरिंदर सिंह ने कहा कि खाद्य सुरक्षा, आवास, छात्रवृत्ति और सामाजिक सुरक्षा जैसी योजनाओं को किसी नेता की उदारता या राजनीतिक उपहार के रूप में नहीं, बल्कि नागरिकों के अधिकार और राज्य के दायित्व के रूप में देखा जाना चाहिए। उनके मुताबिक, जब शासन का आधार व्यक्ति की छवि से आगे बढ़कर संस्थागत अधिकारों और जवाबदेही पर टिकेगा, तभी विकास की प्रक्रिया स्थायी और निष्पक्ष बन सकेगी। आलेख में कैप्टन ने संविधान की मूल अवधारणाओं पर भी अपनी बात रखी है। उनका कहना है कि बहुलतावाद, धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद जैसे शब्दों पर राजनीतिक मतभेद हो सकते हैं, लेकिन संवैधानिक व्यवस्था को केवल राजनीतिक नारों के आधार पर नहीं आंका जा सकता। उनका तर्क है कि समाजवाद का अर्थ निजी क्षेत्र का विरोध या राज्य का पूर्ण नियंत्रण नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक न्याय तथा अवसरों की समानता भी है। कैप्टन अमरिंदर सिंह ने मोदी सरकार की उपलब्धियों को नकारने की बजाय उन्हें भारत की नई राजनीतिक वास्तविकता का हिस्सा माना है। उनका कहना है कि पिछले एक दशक में भारत ने ऊर्जा, महत्वाकांक्षा और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत पहचान हासिल की है। लेकिन उन्होंने यह भी चेताया है कि किसी नेता की ऐतिहासिक सफलता का अंतिम पैमाना केवल उसकी व्यक्तिगत लोकप्रियता या चुनावी जीत नहीं होती। असली कसौटी यह होती है कि उसके बाद देश की संस्थाएं कितनी मजबूत, स्वायत्त और सक्षम बनकर उभरती हैं। यानी, कैप्टन का संदेश सीधे तौर पर मोदी के नेतृत्व को खारिज करने का नहीं, बल्कि उसकी अगली मंजिल तय करने का है। उनका मानना है कि मोदी-इज़्म का अगला चरण व्यक्ति-केंद्रित राजनीति से संस्था-केंद्रित राष्ट्र निर्माण की ओर बढ़ना चाहिए। मजबूत नेतृत्व अपनी जगह जरूरी है, लेकिन उसे संविधान, संसद, न्यायिक एवं संवैधानिक संस्थाओं और नागरिक अधिकारों की मजबूती के साथ आगे बढ़ना होगा। देखा जाये तो पंजाब के चुनावी माहौल में एक वरिष्ठ भाजपा नेता और दो बार के पूर्व मुख्यमंत्री की ओर से उठाया गया यह सवाल इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह केवल पंजाब की राजनीति तक सीमित नहीं है। कैप्टन अमरिंदर सिंह ने अपने आलेख के जरिए राष्ट्रीय राजनीति के सामने एक बुनियादी सवाल रखा है कि क्या भारत का अगला विकास चरण केवल मजबूत नेता के भरोसे आगे बढ़ेगा, या फिर ऐसा संस्थागत ढांचा तैयार करेगा जो किसी भी नेता से बड़ा, ज्यादा टिकाऊ और आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिक जवाबदेह हो? कुल मिलाकर देखें तो कैप्टन के शब्दों का सार यही है कि भारत को मजबूत नेतृत्व चाहिए, लेकिन उससे भी ज्यादा मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाएं। और शायद यही वह बहस है, जिसे उन्होंने पंजाब चुनावों से पहले अपने आलेख के जरिए राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में ला खड़ा किया है।

'वंदे मातरम्' के अपमान से कांग्रेस के तुष्टिकरण की पोल खुली

'वंदे मातरम' के हाल ही में किए गए अपराध और अपमान के संदर्भ में कांग्रेस के प्रवक्ता और आधिकारिक व्यक्तव्य जो कह रहे हैं उसमें वे गांधी जी, नेताजी सुभाषचंद्र, गुरुदेव रबिन्द्रनाथ टैगोर आदि का नाम लेते हुए इस गीत के विभाजन को उनकी से हुआ बता रहे हैं। यह एक भ्रमजाल और झूठ का पहाड़ है। मातृभूमि के स्तुति गीत को आधा स्वीकारना और आधा त्यागना, यह किस प्रकार की संतान की भक्ति है? भद्र बंगाल की सौ वर्षों की व्यथा, वेदना ही इस लोकोक्ति रूप में प्रकट हुई है। भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम का शायद ही कोई दूसरा गीत 'वन्दे मातरम्' जितना भावात्मक, राजनीतिक और ऐतिहासिक रहा हो। बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय जी की यह रचना केवल साहित्य नहीं अपितु वह स्वदेशी आन्दोलन, क्रांतिकारियों और राष्ट्रीय जागरण का उद्घट उद्घोष बनी थी। 15 अगस्त, 2026 को कांग्रेस के केंद्रीय कार्यालय दिल्ली में कारित घृणित कृत्य से कांग्रेस का इस्लामिक डीएनए पुनः सिद्ध हो गया है। वंदे मातरम् के इस अपमान के समय नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, दशक भर कांग्रेस अध्यक्ष रही सोनिया गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे उपस्थित थे। दुस्साहस और दुर्भाग्य का विषय यह है कि इन तीनों ने ही वंदे मातरम् के अपमान के इस दुष्कृत्य को प्रारंभ किया था। इस दुर्भाग्यजनक घटना के बाद कांग्रेस के जमीनी कार्यकर्ताओं ने देश को स्पष्टीकरण देना प्रारंभ किया कि - 'सोनिया गांधी ने वंदे मातरम् का अपमान नहीं किया बल्कि वे बुजुर्ग खड़गे जी को खड़े होने के कारण

असहज होता देखकर उनके लिए कुर्सी मंगा रही थी '। यहीं से कांग्रेस नेतृत्व की मूढ़ता, राष्ट्र अनास्था व मुस्लिम तुष्टिकरण के पक्ष में दुराग्रह रखने के चरित्र की पुनरावृत्ति दिखाई पड़ती है। इस घटनाक्रम के अंतरतत्व को समझिए। कांग्रेस के जमीनी कार्यकर्ताओं को अपने नेतृत्व द्वारा 'वंदे मातरम्' का यह अपमान बुरा लगा इसलिए ही उन्होंने बिना केंद्र या प्रदेश नेतृत्व के कहे ही इस घटना पर कांग्रेस नेतृत्व का बचाव प्रारंभ कर दिया था। हजारों कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने सोशल मीडिया पर लाखों पोस्ट डाली और कांग्रेस नेतृत्व का बचाव किया। यह 'वंदे मातरम्' और 'मुस्लिम तुष्टिकरण की कांग्रेसी प्रवृत्ति' के विरोध का प्रतीक था। इस मनोभाव को कांग्रेस के इटालियन नेतृत्व ने समझने का प्रयास ही नहीं किया। कांग्रेस ने इस घटना पर अपने कार्यकर्ताओं की भावनाओं को नहीं समझा तो भी कोई बात नहीं होती। कांग्रेस ने तो अपनी हठधर्मिता, अड़ियलपन, मति मूढ़ता की हद तो तब दिखा दी जब उसने अपनी राष्ट्रीय वर्किंग कमेटी में 'वंदे मातरम्' को पूर्ण रूप में नहीं गाने के लिए प्रस्ताव ही पारित कर दिया। 'वंदे मातरम्' के हाल ही में किए गए अपराध और अपमान के संदर्भ में कांग्रेस के प्रवक्ता और आधिकारिक व्यक्तव्य जो कह रहे हैं उसमें वे गांधी जी, नेताजी सुभाषचंद्र, गुरुदेव रबिन्द्रनाथ टैगोर आदि का नाम लेते हुए इस गीत के विभाजन को उनकी से हुआ बता रहे हैं। यह एक भ्रमजाल और झूठ का पहाड़ है। गांधी जी तो इस बात के पक्षधर थे कि यह गीत संपूर्ण देश को जोड़ने वाला प्राणतत्त्व है और इसे इसके पूर्ण वैभव के साथ संपूर्णतः स्वीकार किया जाना चाहिए। गांधी जी ने इसके समर्थन में अपनी स्पष्ट राय रखी थी, किंतु जवाहरलाल नेहरू ने तुष्टिकरण की अपनी राजनैतिक कुटिलताओं और प्राथमिकताओं के चलते गांधी जी की एक न चलने दी। इतिहास यह भी है कि, यह दुखद एतिहासिक पृष्ठ रहस्यमयी भी है। रहस्य यह कि - 'अंततः वह कौन सी कमजोर नस थी,, जिसके आधार पर नेहरू जी ऐसे निर्णय भी गांधी जी से करवा लेते थे जिनके लिए गांधी जी कभी भी तैयार नहीं थे '। गांधी जी वंदेमातरम् विभाजन हेतु असहमत थे। गांधी जी बंग-भंग हेतु भी सहमत नहीं थे। गांधी जी ने कहा था कि 'इस देश का विभाजन मेरी लाश पर होगा '। गांधी जी स्वतंत्रता पश्चात् कांग्रेस को विसर्जित करने हेतु भी संकल्पित थे। गांधी जी ने कहा था कि स्वतंत्रता पश्चात् हम एक बूँद की स्याही लेंगे और यह लिख देंगे - 'इस देश में गौहत्या वैसा ही दंड होगा जैसा मानव हत्या के लिए होता है '। स्वच्छता, हिंदी राष्ट्रभाषा, ग्रामवासी भारत आदि हेतु भी गांधी जी प्रतिबद्ध थे। कांग्रेस ने सात दशकों की सत्ता में इन विषयों को त्याज्य रखा। 'भारत में रामराज स्थापना' को कांग्रेस का लक्ष्य बनाया था किंतु 'नेहरू-गांधी कांग्रेस' मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए श्रीराम को ही कल्पना सिद्ध करने के प्रयास में लग गई। कांग्रेस स्वयं को सेकुलर सिद्ध करने के अनथक प्रयास करने लगी थी और 'रामेश्वरम् रामसेतु' के विध्वंस, विनाश, भंजन, खंडन हेतु मशीनें समुद्रतट पर भेज चुकी थी। 'मुस्लिम तुष्टिकरण' हेतु कांग्रेस ने न जाने कितने ही कांड इस देश में किया और सतत-निरंतर किए हैं। आश्चर्य और दुस्साहस का विषय यह है कि 'मुस्लिम तुष्टिकरण' के लिए देश भर से लताड़े जाने के बाद भी कांग्रेस नेतृत्व इस बात को समझ ही नहीं रहा है। हाँ, कांग्रेस का जमीनी कार्यकर्ता इस बात कोई समझ भी रहा है और वह कांग्रेस की 'मुस्लिम तुष्टिकरण' की नीति के विरोध में भी है, तब ही तो 'कार्यकर्ता बेचारे' ने सोशल मीडिया पर लाखों की संख्या में आकर यह कहा था कि 'सोनिया जी वंदे मातरम् का गान रोक नहीं रही थी बल्कि खड़गे जी के लिए कुर्सी बुला रही थी '। 'वंदे मातरम' और 'मुस्लिम तुष्टिकरण' की यह कांग्रेस कार्यकर्ता की नैसर्गिक प्रतिक्रिया थी जिसे कांग्रेस नेतृत्व ने स्वीकार करना चाहिए थे किंतु कांग्रेस ने 'राम पथ' को नहीं बल्कि 'रोम पथ' को चुना हुआ है। 26 अक्टू.- 1 नव. 1937 की कलकत्ता कांग्रेस कार्यसमिति में 'वंदे मातरम्' गान के विभाजन की अनुशंसा और कुछ नहीं बल्कि एक 'इमोशनल राष्ट्रीय ब्लैक मेल' था। यह देश विभाजन में अपना हित देखने वाले नेताओं द्वारा निर्मित 'ब्लैकमेल' था। आदरणीय बंकिम बाबू ने जब भारतमाता को केवल एक भौगोलिक भू-भाग के रूप में नहीं, बल्कि साक्षात् देवी और जननी के रूप में देखा, तो उनके मानस में 'सोनार बांग्ला' और संपूर्ण भारतवर्ष का एक ऐसा दिव्य चित्र उभर आया, जिसने औपनिवेशिक दास्तां के अंधकार को चीरकर रख दिया। विडंबना, वंचना, विसंगति, विचित्र, यह है कि जिस गीत ने स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों, क्रांतिकारियों और हुतात्माओं को हँसते-हँसते फाँसी के फंदों को जयमाल मान लेने की असीम शक्ति दी, उसी महान कृति को स्वतंत्रता के पश्चात राजनीति और तुष्टिकरण के बवंडर में उलझा दिया गया। मुस्लिम तुष्टिकरण के मकड़जाल ने वंदेमातरम् को कोई एक सौ वर्षों तक, उसके पूर्ण गान से वंचित रखा। प्रश्न यह है कि यदि प्रथम दो छंद पहले से ही कई कांग्रेस सभाओं में प्रचलित थे, तो 1937 में उसे औपचारिक रूप से सीमित करने की आवश्यकता क्यों पड़ी? वस्तुतः कांग्रेस, मुस्लिम तुष्टिकरण का समायोजन कर रही थी। कांग्रेस द्वारा गांधी जी, गुरुदेव रबिंद्रनाथ व नेताजी की ढाल लेकर 'वंदे मातरम्' का विरोध ग़लत है।

आज का राशि फल

मेष राशि: आज का दिन जीवन में मील का पत्थर साबित होगा। वकीलों के लिये आज का दिन अच्छा रहेगा, नया केस हाथ लगेगा। आज खास लोगों के बीच किसी नई गतिविधि को लेकर गंभीर चर्चा होगी, जो कि सकारात्मक रहेगी। आज किसी मामले को लेकर विचारों में भावुकता रहेगी। आज कुछ लोग जलन की भावना से आपकी आलोचना कर सकते हैं।

वृष राशि: आज आपका दिन ठीक-ठाक रहने वाला है। आज आपको किसी भी प्रकार के विवादों से दूर रहने की आवश्यकता है। आज व्यवसायिक काम समय पर बनते जाएंगे। विदेश संबंधी व्यवसाय में परिस्थितियां आपके अनुकूल होने के आसार हैं। आज ऑफिस में सहयोगियों की कार्यकुशलता से टारगेट समय पर पूरा हो जाएगा।

मिथुन राशि: आज आपके हर परेशानी का हल चुटकियों में निकल जायेगा। आज आप लेखन कार्यों में रुचि लेंगे आपका लेखन और अच्छा होगा। आज आपकी बातें दूसरों पर प्रभाव डालेगी। आज रोजमर्रा के कामों से हटकर कुछ नया सीखने में समय बीतेगा। प्रॉपर्टी या वाहन की खरीददारी में लाभ की बेहतर स्थिति बनेगी। आध्यात्म और धार्मिक गतिविधियों में आपका रुझान बढ़ेगा।

कर्क राशि: आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। बड़े निर्णय लेने के लिए दिन अच्छा है। किसी नयी बिजनेस डील के लिए ऑफर मिलेगा। थोड़ी सी बात पर परेशान होने के बजाय उसका हल ढूंढने की कोशिश करेंगे तो आपको सलूशन मिल जायेगा। आप जीवनसाथी के साथ घर के कार्यो को पूरा करने में व्यस्त रहेंगे। मेडिकल की पढ़ाई कर रहे छात्रों के लिए दिन अच्छा है।

सिंह राशि: आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आज व्यवसाय में अतिरिक्त आय का साधन बनने वाला है। अगर आपका साझेदारी में बिजनेस करने का प्लान है तो ये डील आपके लिए फायदेमंद होगी। अधिकतर समय मार्केटिंग और बाहर की गतिविधियों में बीतेगा। इस राशि के सरकारी नौकरी कर रहे लोग अपने कार्यभार से संतुष्ट रहेंगे। आपको घर के बड़ो से कुछ प्रेरणा मिलेगी। आज आप जो भी काम शुरू करेंगे, वो सफल होगा।

कन्या राशि: आज आपका दिन बेहतरीन रहने वाला है। आज ध्यान रखें कि अगर प्रयासरत कार्यों में समस्या आती है तो इसकी वजह आपकी एकाग्रता में कमी होगी। आज सम्मानित और प्रभावशाली लोगों के संपर्क में आने से आपको कई नए विषयों की जानकारी मिलेगी। आज घर के लिए इलेक्ट्रॉनिक वस्तु की खरीदारी संभव है। लोग आपके व्यवहार से खुश रहेंगे।

तुला राशि: आज का दिन आपके लिये अच्छे परिणाम लाने वाला होगा। आज घरवालों के साथ अच्छा समय बिताने को मिलेगा, जिससे परिवार का माहौल खुशनुमा रहेगा। आज किसी समस्या को हल करने में आपका सहयोग सकारात्मक रहेगा। आस-पड़ोस की सामाजिक गतिविधियों में आपका वर्चस्व रहेगा। प्रॉपर्टी से संबंधित काम हल होगा। आज नकारात्मक लोगों से दूर रहेंगे और आलस की स्थिति से बचेंगे तो आपका काम समय से पूरा हो जायेगा।

वृश्चिक राशि: आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। आज कार्यों को सुचारु रूप से करने के लिए ज्यादा मेहनत करनी होगी। हालांकि सही समय पर उचित निर्णय लेने से आपकी काफी समस्याएं हल हो जाएंगी। इस समय नया कार्य शुरू न करें, आज के कामों को ही व्यवस्थित करने पर ध्यान देंगे। ऑफिस में आपका प्रभुत्व बना रहेगा। नवविवाहित दंपत्ति के बीच आज मीठी नोक-झोक होगी, इससे रिश्तों में और मिठास आयेगी। स्वास्थ्य के लिहाज से आज का दिन अच्छा रहने वाला है।

धनु राशि: आज पूरे दिन भाग्य आपके साथ रहेगा। आज जल्दबाजी में फैसला न लें, न ही दूसरों के मामले में हस्तक्षेप करें। आज किसी अनजान व्यक्ति के सहयोग से आपका मन प्रसन्न रहेगा। आज आप अपने खर्चों पर नियंत्रण बनाने की योजना बनायेंगे। साथ ही आय बढ़ाने के लिए नया प्लान बनायेंगे। छात्रों के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है किसी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने का मन बनायेंगे। कला जगत से जुड़े लोगों के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है।

मकर राशि: आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। छात्रों को आज बहुत अधिक मेहनत करने की जरूरत है। आज आप लेनदेन को स्थगित रखेंगे तो आने वाली किसी समस्या से बच जायेंगे। इस राशि के लोगों को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे, जिससे उनके अंदर आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आपकी ऑफिशियल यात्रा संभव है।

कुंभ राशि: आज का दिन मिली-जुली प्रतिक्रिया देने वाला रहेगा। आज आपका दिन खुशनुमा बीतेगा। घर पर ही परिवारवालों के साथ धार्मिक कार्यों का आयोजन करेंगें। आज आपकी तरक्की के कई रास्ते खुलेंगे। ऑफिस के काम को थोड़ा संभलकर करने की जरूरत है, आपके काम की शिकायत कर सकता है। आज किसी से भी उलझने से आपको बचना चाहिए।

मीन राशि: आज आपको किसी अपने से अच्छी खबर मिलने के योग बने हुये है। आज व्यक्तिगत काम के समय आप घबराने की बजाय परिस्थितियों का समाधान ढूंढने का प्रयास करेंगे और इसमें आप सफल भी होंगे। परिवारिक सदस्य की किसी उपलब्धि से घर में उत्सव का माहौल रहेगा। मार्केटिंग की जॉब कर रहे लोगों से आज अच्छा क्लाइंट जुड़ेगा।

ड्यूटी खत्म, रिश्ता नहीं

रिटायरमेंट के बाद भी पुलिस के साथ रहेंगे वफादार डॉग्स, फडणवीस सरकार का फैसला

मुंबई, 22 अगस्त (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने पुलिस बल के साथ वर्षों तक सेवा देने वाले पुलिस डॉग्स के हित में एक संवेदनशील फैसला लिया है। अब पुलिस डॉग्स सेवानिवृत्ति के बाद भी पुलिस बल और अपने हैंडलर के साथ रह सकेंगे। आमतौर पर 10 साल की सेवा पूरी करने के बाद पुलिस डॉग्स सेवानिवृत्त हो जाते हैं। पहले ऐसे डॉग्स को कई बार किसी अन्य जगह गोद दे दिया जाता था, जिसका उनके मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता था। कई मामलों में वे खाना तक छोड़ देते थे। मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि जिस डॉग ने 10 साल तक पुलिस बल के लिए अपनी सेवाएं दी हैं, उसे सेवानिवृत्ति के बाद तकलीफ में नहीं छोड़ा जाना चाहिए।

ऐसे वफादार साथी की देखभाल करना और उसके जीवन के बाकी वर्ष सम्मान व सुकून के साथ बिताने का अवसर देना जरूरी है। नई व्यवस्था के तहत पुलिस डॉग्स 10 साल की

सेवा पूरी करने के बाद सक्रिय ड्यूटी से सेवानिवृत्त होंगे, लेकिन उन्हें पुलिस बल से अलग नहीं किया जाएगा। वे अपने पुराने पुलिस विभाग और हैंडलर के साथ ही रह सकेंगे। सेवानिवृत्त पुलिस डॉग्स के भोजन और उनकी जरूरतों से जुड़े अन्य खर्चों की जिम्मेदारी गृह विभाग उठाएगा। इससे इन डॉग्स की सेवानिवृत्ति के बाद भी उचित देखभाल सुनिश्चित हो सकेगी और पुलिस विभाग पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ नहीं पड़ेगा। पुलिस श्वान अपने हैंडलर के साथ लंबे समय तक प्रशिक्षण और ड्यूटी करते हैं। इस दौरान दोनों के बीच मजबूत भावनात्मक जुड़ाव बन जाता है।

सेवानिवृत्ति के बाद भी उन्हें उसी वातावरण और अपने परिचित हैंडलर के साथ रहने का मौका मिलने से अचानक अलगाव से होने वाले मानसिक तनाव को कम किया जा सकेगा। मुख्यमंत्री फडणवीस ने इस फैसले के जरिए यह स्पष्ट किया है कि पुलिस बल में वर्षों तक योगदान देने वाले इन बेजुबान साथियों की जिम्मेदारी उनकी सेवा समाप्त होने के साथ खत्म नहीं होती। नई व्यवस्था का उद्देश्य सेवानिवृत्त पुलिस श्वानों को सुरक्षित, सम्मानजनक और आरामदायक जीवन देना है।

चुनावों को देखते हुए, पंजाब के सीएम मान डिस्कवरी पर दिखेंगे

चंडीगढ़, 22 अगस्त (एजेंसियां)। 2027 के पंजाब विधानसभा चुनावों में छह महीने से भी कम समय बचा है। ऐसे में, सतौज से संसद नाम की एक डॉक्यूमेंट्री 30 अगस्त को डिस्कवरी चैनल पर दिखाई जाएगी। यह डॉक्यूमेंट्री संगरूर ज़िले के सतौज गाँव में मुख्यमंत्री भगवंत मान के बचपन से लेकर अब तक के सफ़र पर आधारित है। मान ने फ़िल्म का एक प्रोमोशनल वीडियो शेयर किया।

इसमें उन्होंने अपने सफ़र को ज़मीन से जुड़े इंसान, लोगों को हंसाने वाले व्यंग्यकार और गवर्नेंस का नया स्टैंडर्ड सेट करने वाले मुख्यमंत्री के तौर पर बताया। लोगों से इसे देखने की अपील करते हुए मान ने एक्स पर कहा कि यह डॉक्यूमेंट्री 30 अगस्त को शाम 7 बजे सात भाषाओं में दिखाई जाएगी। यह डॉक्यूमेंट्री मान के निजी सफ़र को उनकी आप सरकार की उपलब्धियों से जोड़ती है। साथ ही, इसमें एक व्यंग्यकार के तौर पर उनके करियर और राजनीति में उनके आने की कहानी भी दिखाई गई है। राज्य में चुनाव नज़दीक हैं, ऐसे में उम्मीद है कि यह फ़िल्म आप को सीएम मान की पंजाबी पहचान और गवर्नेंस के रिकॉर्ड के आधार पर चुनावी नैरेटिव बनाने में मदद करेगी।

30 दुर्लभ कछुओं के साथ 2 आरोपी पकड़ाए, अंतरराष्ट्रीय गिरोह से संपर्क मिले

इंदौर, 22 अगस्त (एजेंसियां)। इंदौर में 30 कछुओं के साथ पकड़े गए 2 आरोपियों से पूछताछ में वन विभाग को वन्यजीव तस्करी के एक बड़े नेटवर्क के संकेत मिले हैं। स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स ने मूसाखेड़ी निवासी केशव शर्मा और रोहन गौड़ को कछुओं की तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया था। दोनों को कोर्ट में पेश करने के बाद 24 अगस्त तक वन विभाग की रिमांड पर लिया है।

अब जांच का फोकस सिर्फ बरामद कछुओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके पीछे मौजूद सप्लायर, खरीदार और नेटवर्क को खंगालने पर है। शुरुआती पूछताछ में आरोपियों के संपर्क महाराष्ट्र सहित अन्य राज्यों से जुड़े मिले हैं। टीम यह पता लगाने में जुटी है कि कछुए कहां से लाए गए, किसके जरिए इंदौर पहुंचाए गए और आगे किन लोगों को इनकी सप्लाई की जानी थी। जांच में यदि कड़ियां जुड़ती हैं तो वन्यजीवों की तस्करी करने वाले एक बड़े नेटवर्क का खुलासा हो सकता है।

इन कछुओं की डिमांड इंदौर के साथ ही अंतरराष्ट्रीय स्तर तक होती है। जांच में सामने आया है कि दोनों आरोपियों के बीच काम बंटा हुआ था। केशव ग्राहकों से संपर्क कर कछुओं का सौदा करता था, जबकि रोहन उन्हें ग्राहकों तक पहुंचाने का काम करता था। अब अधिकारियों की कोशिश यह पता लगाने की है कि दोनों के पीछे कौन लोग सक्रिय थे और उन्हें कछुओं की नियमित सप्लाई कौन कर रहा था। टीम आरोपियों के मोबाइल फोन में मिले संपर्कों, कॉल डिटेल और अन्य डिजिटल सुरागों को भी जांच का हिस्सा बना रही है।

पूछताछ में महाराष्ट्र सहित अन्य राज्यों से सप्लाई लिंक के संकेत मिलने के बाद जांच का दायरा बढ़ गया है। टीम यह भी पता कर रही है कि क्या आरोपी लंबे समय से कछुओं की तस्करी में सक्रिय थे या हाल में इस नेटवर्क से जुड़े। अधिकारियों को आशंका है कि नेटवर्क में केवल सप्लायर और खरीदार ही नहीं, बल्कि वन्यजीवों को पकड़ने, उन्हें एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने और ग्राहकों तक डिलीवरी करने वाले कई लोग शामिल हो सकते हैं।

ईडब्ल्यूएस छात्रा को स्कूल से नहीं निकाल सकता प्रबंधन

दिल्ली हाई कोर्ट ने स्कूल शिक्षा नियम का दिया हवाला

नई दिल्ली, 22 अगस्त (एजेंसियां)। दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा है कि 14 साल से कम उम्र के बच्चे को दिल्ली स्कूल शिक्षा नियम के तहत स्कूल से निकाला नहीं जा सकता। कोर्ट ने दिल्ली पब्लिक स्कूल को निर्देश दिया कि वे आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) की 13.5 साल की छात्रा को अपनी आठवीं कक्षा की पढ़ाई जारी रखने दें।

अदालत ने उक्त अंतरिम आदेश नाबालिग छात्रा की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया। छात्रा ने मां के माध्यम से दायर याचिका में स्कूल से अनुपस्थित रहने और एक परीक्षा छूट जाने के बाद की गई कार्रवाई को चुनौती दी थी। अदालत ने गौर किया कि ईएसडब्ल्यू श्रेणी की छात्रा 2016 से स्कूल में पढ़ रही थी और अभी आठवीं कक्षा की छात्रा है। छात्रा ने कहा कि वह छह जुलाई को स्कूल नहीं गई थी और उस दिन होने वाली परीक्षा भी नहीं दे पाई थी, क्योंकि 11वीं कक्षा के दो छात्रों ने उसे ऐसा करने के लिए मना लिया था।

सभी तथ्यों को देखते हुए कोर्ट ने कहा कि दिल्ली स्कूल शिक्षा नियमों के नियम 37(एक)(बी) में खास तौर पर 14 साल या उससे ज्यादा उम्र के छात्रों के लिए जुर्माना, स्कूल से निकालना और निलंबन जैसे अनुशासनात्मक उपायों का प्रविधान है। अदालत ने कहा कि इस मामले में याचिकाकर्ता की उम्र अभी सिर्फ साढ़े 13 साल है और अदालत माना कि स्कूल की कार्रवाई पहली नजर में नियमों में दी गई स्पष्ट शर्तों के खिलाफ़ थी।

दिल्ली के अशोक विहार में महिला को बंधक बनाकर 75 लाख की लूट का पर्दाफाश, 48 घंटे में 8 गिरफ्तारियां

नई दिल्ली, 22 अगस्त (एजेंसियां)। अशोक विहार इलाके में महिला को बंधक बनाकर चाकू की नोक पर की गई 75 लाख रुपये की सनसनीखेज लूट का उत्तर-पश्चिम जिला पुलिस ने पर्दाफाश कर दिया है। पुलिस ने मामले में आठ आरोपितों को पकड़ा है, जिनमें दो किशोर भी शामिल हैं। पुलिस ने लूटी गई रकम में से बड़ी राशि बरामद करने का दावा किया है।

पुलिस के अनुसार, वारदात के दौरान आरोपितों ने मीरा को बंधक बना लिया और चाकू दिखाकर जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद आरोपित घर में रखी करीब 75 लाख रुपये की नकदी और कुछ जेवरात लेकर फरार हो गए। मीरा, मनोज कुमार की पत्नी हैं। मनोज कुमार की वजीरपुर इलाके में फैक्ट्री है। बताया जा रहा है कि बेटियों की शादी के लिए बड़ी रकम घर में रखी गई थी। वारदात की सूचना मिलते ही पुलिस ने कई टीमें गठित कर जांच शुरू की।

आखिर फुटेज किसने गायब कराए?

फंदे की बेल्ट डॉक्टरों को क्यों नहीं सौंपी? चार्जशीट के बाद भी उठे सवाल

भोपाल, 22 अगस्त (एजेंसियां)। राजधानी भोपाल की हाईप्रोफाइल त्विषा शर्मा संदिग्ध मौत के मामले में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने भोपाल ट्रायल कोर्ट में चालान प्रस्तुत कर दिया है, लेकिन अभी भी त्विषा के परिजनों की ओर से कई ऐसे सवाल उठाए जा रहे हैं, जिनके जवाब उन्हें नहीं मिले हैं। परिजनों के अधिवक्ता ने चालान का काफी अध्ययन किया। इसके बाद त्विषा के परिजनों की ओर से प्रतिक्रिया आई है कि आखिर त्विषा शर्मा 12 मई की सुबह जिस ब्यूटी पार्लर में पहुंची थी, उसका सीसीटीवी फुटेज कौन निकलवाने गया था?

उन्हें फुटेज निकलवाने के लिए किसने भेजा था और किसने आदेश दिया था? क्या वह अपराध की श्रेणी में नहीं आता? ऐसी स्थिति में जब वह न्यायालय में बतौर साक्ष्य प्रस्तुत किया जा सकता है। त्विषा जब 12 मई की सुबह ब्यूटी पार्लर पहुंची तो उसके शरीर पर चोट के कहीं निशान नहीं थे। क्योंकि चोट के निशान होते

तो ब्यूटी पार्लर की संचालिका और कर्मचारियों से पुलिस और सीबीआई पूछताछ कर चुकी है, किसी को तो वह यह बात बताते। कई मीडिया वालों ने भी ब्यूटी पार्लर के कर्मचारियों से बातचीत की है, लेकिन चोट का जिक्र किसी ने नहीं किया। तब भोपाल एम्स की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में त्विषा के सिर सहित शरीर के अन्य अंगों में करीब आधा दर्जन चोट के निशान कहां से आए थे? त्विषा शर्मा के परिजनों ने सवाल उठाए हैं कि दिल्ली एम्स के वरिष्ठ चिकित्सकों के बोर्ड ने 24 मई को जब दोबारा पोस्टमार्टम किया तो त्विषा के शरीर पर चोट के निशान नहीं मिले थे। दिल्ली एम्स की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में त्विषा शर्मा के शरीर पर चोट के निशान नहीं मिलने को लेकर परिजनों ने भोपाल एम्स पर भी सवाल खड़े किए हैं।

त्विषा मामले में सीबीआई की 636 पन्नों की चार्जशीट और गवाहों के बयानों से अब केवल मानसिक प्रताड़ना के आरोप ही नहीं, बल्कि घटना के बाद की पुलिस कार्रवाई और साक्ष्य जुटाने की प्रक्रिया भी सवालों के घेरे में है। 12 मई की रात करीब 9:36 बजे त्विषा ने अपनी मां को संदेश भेजकर अपनी स्थिति और मानसिक पीड़ा जाहिर की। रात करीब 10:23 बजे के बाद उन्हें घर से बाहर ले जाने और रात करीब 10:55 बजे एम्स में जांच के बाद मृत घोषित किए जाने का घटनाक्रम चार्जशीट में दर्ज है।

विजय सरकार बच्चों को देने जा रही है सोने की अंगूठी, ज्वेलर्स को दिया ऑर्डर

चेन्नई, 22 अगस्त (एजेंसियां)। तमिलनाडु को लेकर मुख्यमंत्री विजय ने बड़ी घोषणा की है। उन्होंने नवजात बच्चों के लिए 'थैमामन गोल्ड रिंग स्कीम' की शुरुआत की है। अहम बात यह है कि इसके लिए दो ज्वेलर्स को ऑर्डर भी दे दिया गया है। इस योजना के तहत तमिलनाडु सरकार जून से सरकारी अस्पतालों में जन्म लेने वाले बच्चों को सोने की अंगूठी देगी। पहली बार में 1,28,499 सोने की अंगूठियां बांटी जाएंगी। रिपोर्ट के मुताबिक, तमिलनाडु मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन (टीएनएमएससी) ने जॉय अलुक्कास और कल्याण ज्वेलर्स को 70:30 के अनुपात में ऑर्डर दिया है। अहम बात यह भी है कि तमिलनाडु सरकार ने इस योजना की शुरुआत 15 सितंबर 2026 को करने का फैसला किया है।

15 सितंबर को पूर्व मुख्यमंत्री सी एन अन्नादुरई की जयंती भी है। सीएम विजय ने अप्रैल में हुए विधानसभा चुनाव से पहले इस योजना की घोषणा की थी। तमिलनाडु सरकार के आदेश के बाद कुल 4,41,667 सोने की अंगूठियां खरीदी जाएंगी। हर अंगूठी

का वजन करीब एक ग्राम होगा। इसके लिए टीएनएमएससी ने 14 जुलाई को टेंडर जारी किया था, जिसमें 11 कंपनियों ने हिस्सा लिया था। सरकार के मुताबिक, जॉय अलुक्कास ने एक ग्राम सोने की कीमत को छोड़कर 0.01 रुपये की अपनी सबसे कम कीमत दी। इसमें प्रोसेसिंग फीस, इश्योरेंस, परिवहन और बीआईएस स्टांपिंग समेत सभी चार्ज शामिल थे।

रिपोर्ट के मुताबिक कल्याण ज्वेलर्स ने भी सबसे कम कीमत की पेशकश की। योजना को 15 सितंबर से लागू किया जाना है, इसलिए जून से सितंबर के चार महीनों के दौरान जन्म लेने वाले पात्र बच्चों के लिए 1,28,499 अंगूठियों की आपूर्ति का वर्क ऑर्डर दोनों कंपनियों को दिया गया है।

सोने की अंगूठी को लेकर एक अहम नियम यह भी है कि सरकारी अस्पतालों में जन्म लेने वाले बच्चों को ही इस योजना का फायदा मिलेगा। सरकार का कहना है कि 'गोल्ड रिंग स्कीम' का बड़ा मकसद लोगों के सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं पर भरोसे को मजबूत करना है। लिहाजा 22 जून 2026 से सरकारी अस्पतालों में जन्म लेने वाले बच्चों को ही अंगूठी दी जाएगी।

पत्नी को वापस पाने की चाह ने बनाया कातिलः पहले आदमी का काटा सिर फिर पूजा घर में दफनाया, आरोपी गिरफ्तार

भुवनेश्वर, 22 अगस्त (एजेंसियां)। ओडिशा के बोलांगीर जिले में कथित तांत्रिक क्रिया के एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। जानकारी के मुताबिक, 40 वर्षीय एक व्यक्ति ने पड़ोसी गांव के 45 वर्षीय ग्रामीण की कथित तौर पर सिर काटकर हत्या कर दी और उसका सिर अपने पूजा घर में दफना दिया। पुलिस के मुताबिक, आरोपी का मकसद करीब तीन साल पहले उसे छोड़कर गई अपनी पत्नी को वापस पाना था। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

मामला पिछले गुरुवार को सामने आया, जब 18 अगस्त से लापता तेबड़ामुंडा गांव निवासी संतोष खरसेल (45) का सिर कटा शव बगड़ा गांव के एक तालाब से बरामद किया गया। इसके बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू की। जांच के दौरान पता चला कि संतोष खरसेल को आखिरी बार सत्रुघ्न साहू (40) के साथ देखा गया था। पुलिस ने साहू को हिरासत में लेकर पूछताछ की। पूछताछ के दौरान उसने हत्या की बात कबूल कर ली, लेकिन शुरुआत में दावा किया कि शराब पीने के बाद हुए तीखे विवाद के चलते उसने संतोष की हत्या की थी।

एफबीआई की मोस्ट वांटेड लिस्ट में शामिल हुआ बिश्नोई गैंग का बदमाश कमल

अमेरिका में चल रहा था रंगदारी का नेटवर्क

चंडीगढ़, 22 अगस्त (एजेंसियां)। अमेरिका की संघीय जांच एजेंसी एफबीआई ने पंजाब से जुड़े बिश्नोई गैंग के कथित सदस्य कमल को अपनी मोस्ट वांटेड सूची में शामिल किया है। एजेंसी के अनुसार कमल पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संचालित आपराधिक नेटवर्क का हिस्सा होने और रंगदारी व मादक पदार्थों की तस्करी समेत कई गंभीर अपराधों में संलिप्त होने के आरोप हैं। एफबीआई ने उसके खिलाफ संघीय गिरफ्तारी वारंट भी जारी किया है। एफबीआई की ओर से जारी जानकारी के मुताबिक कमल को जुलाई में अमेरिका के कैलिफोर्निया स्थित सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में पेश किया गया था। उस पर कानस्पिरेसी टू इंटरफेयर विद कामर्स बाय एक्सटॉर्शन यानी रंगदारी के जरिये कमर्शियल गतिविधियों में हस्तक्षेप की साजिश का आरोप लगाया गया है।

एजेंसी के अनुसार मामले की जांच संगठित अपराध और अंतरराष्ट्रीय ड्रग नेटवर्क से जुड़े पहलुओं को ध्यान में रखकर की जा रही है। एफबीआई के अनुसार बिश्नोई आपराधिक संगठन की शुरुआत पंजाब में हुई और बाद में इसके कथित नेटवर्क का विस्तार दक्षिणी कैलिफोर्निया समेत अमेरिका के अन्य हिस्सों तक हुआ। जांच एजेंसी का आरोप है कि इस नेटवर्क से जुड़े लोगों ने भारत में रंगदारी से जुटाई गई रकम को अमेरिका तक पहुंचाने और अवैध गतिविधियों में इस्तेमाल करने की कोशिश की।

अमेरिकी एजेंसी ने आरोप लगाया है कि कमल और उसके सहयोगियों ने रंगदारी वसूली तथा मादक पदार्थों की तस्करी से जुटाई गई रकम को एकत्र किया। एफबीआई के दस्तावेजों में एक मामले का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि कमल ने कथित तौर पर नेटवर्क की ओर से 15 हजार डालर की रंगदारी वसूली थी। आपरेशन हार्ड बाल' के तहत कार्रवाई एफबीआइ ने बिश्नोई गैंग और उससे जुड़े नेटवर्क के खिलाफ आपरेशन हार्ड बाल शुरू किया है। एजेंसी के मुताबिक इस अभियान के तहत अब तक बिश्नोई, जग्गू भगवानपुरिया और रविंदर सिंह ढिल्लों से जुड़े सात लोगों को मोस्ट वांटेड सूची में शामिल किया गया है। इन आरोपितों पर हत्या, रंगदारी और अंतरराष्ट्रीय मादक पदार्थ तस्करी जैसे गंभीर अपराधों के आरोप हैं।

'मुझे चाइनीज मत बोलो, मैं इंडियन हूं' मां ने बनाया था वीडियो, ईटानगर की बेटी के जवाब ने जीता दिल

ईटानगर, 22 अगस्त (एजेंसियां)। अरुणाचल प्रदेश की राजधानी ईटानगर की छोटी-सी बच्ची करगा टिंकल गोंगो इन दिनों सोशल मीडिया पर छाई हुई है। टिंकल ने एक वीडियो में लोगों से कहा कि उसे चाइनीज न कहा जाए। उसका यह मासूम और भावुक वीडियो पूरे देश में वायरल हो गया। टिंकल ने आईएएनएस से बातचीत में कहा, भैया ने मुझे चाइनीज कहा, तो मैंने उनसे कहा, मुझे चाइनीज मत बोलो, मुझे इंडियन बोलो। टिंकल की मां ने आईएएनएस को बताया कि उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि उनका वीडियो इतना वायरल हो जाएगा। टिंकल की मां ने कहा, टिंकल को भी थोड़ा बुरा लगा था। उस दिन मैं अपनी बेटी का आइसक्रीम खरीदते हुए वीडियो बना रही थी। बेटी ने आइसक्रीम के लिए 10 रुपए मांगे।

मैंने उसे पैसे दिए, उसके आइसक्रीम खरीदने का वीडियो बनाया और फिर पोस्ट कर दिया। वीडियो पोस्ट करने के बाद किसी ने कमेंट किया, ये चाइनीज बच्ची हिंदी क्यों बोल रही है? क्या चाइनीज बच्चा हिंदी बोलता है? टिंकल की मां ने बताया, मैंने टिंकल से कहा, टिंकल, कोई तुम्हें चाइनीज बच्ची कह रहा है। टिंकल बहुत उदास हो गई और बोली, हम चाइनीज नहीं हैं, हम इंडियन हैं।

इसके बाद टिंकल ने खुद कहा, मम्मी मैं भी वीडियो बनाऊंगी। और फिर टिंकल ने वीडियो में बोल दिया कि मुझे चाइनीज मत बोलो हम इंडियन ही हैं। चाइनीज बोलने से मेरा मन दुखी होता है। टिंकल की मां ने कहा, हम लोग अरुणाचल में हैं, और अरुणाचल भी इंडिया का हिस्सा ही है ना। करगा टिंकल गोंगो ईटानगर से हैं, जिसने नॉर्थ ईस्ट इंडिया के लोगों को 'चाइनीज' कहने पर एक भावुक वीडियो बनाकर पूरे देश का ध्यान खींचा। उसकी सच्ची और सीधी बात ने लोगों के दिलों को छू लिया।

इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म पर इस वीडियो को लाखों व्यूज मिल चुके हैं। टिंकल का यह वीडियो नॉर्थ ईस्ट के लोगों की भावना को दर्शाता है, जो अक्सर इस तरह की टिप्पणियों का सामना करते हैं।

डीएमके में 'नई पीढ़ी' की एंट्री का रास्ता साफ

दो कार्यकाल के बाद छोड़नी होगी कुर्सी; नेताओं के उम्र की सीमा तय

चेन्नई, 22 अगस्त (एजेंसियां)। डीएमके की कार्यकारिणी समिति की बैठक में पार्टी संगठन में नई पीढ़ी को आगे लाने के लिए विभिन्न पदों पर उम्र और कार्यकाल की सीमा तय करने का फैसला किया गया। शाखा समिति सचिव के लिए 45 वर्ष, वार्ड

समिति सचिव के लिए 50 वर्ष और टाउन पंचायत, एरिया व सिटी कमेटी सचिवों के लिए 60 वर्ष की अधिकतम उम्र निर्धारित की गई है। अधिकांश पदों पर अधिकतम दो कार्यकाल की सीमा भी तय की गई है।

पार्टी संगठन में नई पीढ़ी को मौका देने के लिए शाखा समिति के सचिव पद के लिए अधिकतम उम्र 45 वर्ष तय की गई है। इस पद पर चुना गया व्यक्ति अधिकतम दो कार्यकाल तक ही जिम्मेदारी संभाल सकेगा। नगरपालिका, नगर निगम और टाउन पंचायत की वार्ड समितियों के सचिव पद के लिए अधिकतम उम्र 50 वर्ष निर्धारित की गई है। इस पद पर भी कोई व्यक्ति अधिकतम दो कार्यकाल तक ही रह सकेगा। टाउन पंचायत समिति के सचिव पद के लिए अधिकतम उम्र 60 वर्ष तय की गई है।

यहां भी किसी व्यक्ति को अधिकतम दो कार्यकाल तक ही पद पर बने रहने की अनुमति होगी। चेन्नई कॉरपोरेशन में एरिया कमेटियों का गठन औसतन 40,000 मतदाताओं के आधार पर किया जाएगा। वहीं, अन्य नगर निगमों में एक एरिया कमेटी में औसतन 30,000 मतदाता होंगे। एरिया कमेटी के सचिव पद के लिए अधिकतम उम्र 60 वर्ष तय की गई है और कोई व्यक्ति अधिकतम दो कार्यकाल तक इस पद पर रह सकेगा।

सिटी कमेटियों का गठन औसतन 40,000 मतदाताओं के आधार पर किया जाएगा। सिटी कमेटी के सचिव पद के लिए अधिकतम उम्र 60 वर्ष तय की गई है। इस पद पर भी कोई व्यक्ति अधिकतम दो कार्यकाल तक ही जिम्मेदारी संभाल सकेगा।

स्वाइन फ्लू का बढ़ता प्रकोप

दिल्ली में 1770 से ज्यादा मामले

नई दिल्ली, 22 अगस्त (एजेंसियां)। दिल्ली में इस साल अब तक स्वाइन फ्लू (एच1एन1) के 1770 से ज्यादा मामले सामने आ चुके हैं। वहीं, मानसून के दौरान मौसमी इन्फ्लूएंजा के मामलों में भी बढ़ोतरी देखी जा रही है। शुक्रवार को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा और स्वास्थ्य मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री पंकज कुमार सिंह और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने बैठक कर स्वाइन फ्लू की स्थिति की समीक्षा की। सिंह ने बताया कि स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है और सभी सरकारी अस्पतालों को इलाज की पर्याप्त व्यवस्था रखने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि संक्रमण के पैटर्न, प्रभावित इलाकों और संभावित हॉटस्पॉट पर भी निगरानी बढ़ाई गई है। स्वाइन फ्लू के मरीजों के लिए अस्पतालों में अलग वार्ड तैयार किए जा रहे हैं। दिल्ली में एक ही दिन में एच1एन1 के 114 नए मरीज मिले। इससे इस वर्ष अब तक एन1एच1 की पुष्टि हुई मरीजों की संख्या बढ़कर 1,777 हो गई। छह अगस्त तक दिल्ली में एच1एन1 के 1,344 मामले थे।

यानी मात्र 14 दिन में 433 नए मामले सामने आए। 20 अगस्त को मिले 114 नए मरीज दिल्ली के किन अस्पतालों में रिपोर्ट हुए हैं, इसका ब्योरा स्वास्थ्य विभाग ने अब तक सार्वजनिक नहीं किया है। पिछले वर्ष इसी अवधि में 229 मामले थे। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष करीब आठ गुना मामले हो गए हैं। वहीं, एम्स के विशेषज्ञों के अनुसार मानसून के दौरान तापमान में उतार-चढ़ाव और उमस के कारण इन्फ्लुएंजा के मामले बढ़ सकते हैं। बुजुर्गों और पहले से फेफड़े, हृदय, मधुमेह सहित अन्य गंभीर बीमारियों से पीड़ित मरीजों में संक्रमण गंभीर होने का खतरा अधिक रहता है।

सर गंगा राम अस्पताल के इंटरनल मेडिसिन विभाग के कंसल्टेंट फिजिशियन डॉ। ऋषिकेश देसाई के अनुसार, अस्पताल में मौसमी इन्फ्लूएंजा के मरीज बढ़े हैं। उन्होंने बताया कि स्वस्थ लोगों में संक्रमण आमतौर पर ठीक हो जाता है, लेकिन बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं, छोटे बच्चों और पहले से किसी बीमारी से जूझ रहे लोगों में फ्लू गंभीर रूप ले सकता है। वहीं, संक्रामक रोग विशेषज्ञ डॉ. नेहा रस्तोगी पांडा ने भी इन्फ्लूएंजा और फ्लू जैसे लक्षणों वाले मरीजों में बढ़ोतरी की बात कही।

रजनीकांत की फिल्म के गाने पर क्यों छिड़ा विवाद? यूजर्स ने 'जेलर 2' के मेकर्स को दी ये सलाह

रजनीकांत की अपकमिंग फिल्म 'जेलर 2' के मेकर्स फिल्म के एक प्रमोशनल गाने के रिलीज होने के बाद भाषा से जुड़े विवाद में फंस गए हैं। मंगलवार को 'अला बोलेलो' नाम के पहले गाने का 32-सेकंड का टीजर जारी किया गया। मगर मलयालम बोलने वाले दर्शकों के एक वर्ग ने गाने में मलयालम शब्दों के गलत उच्चारण पर निराशा जताई और इसकी आलोचना की।

कौन हैं 'अला बोलेलो' के गायक?

'अला बोलेलो' के प्रमोशनल वीडियो में शमना कासिम केरल की पारंपरिक 'कासावु' पोशाक में डांस कर रही हैं।

इसमें रजनीकांत की एक छोटी सी झलक दिखाई देती है।

गाने को अनिरुद्ध रविचंदर ने कंपोज किया है।

अरुणराजा कामराज की तरफ से लिखे गए गाने में तमिल और मलयालम भाषाओं का मिश्रण है।

गाने को निरंजना रमन, अपर्णा हरिकुमार और दीप्ति सुरेश ने आवाज दी है।

क्यों निराश हुए श्रोता?

फिल्म के संगीत रिलीज को लेकर शुरुआती उत्साह के

बावजूद, क्लिप के लाइव होने के तुरंत बाद केरल के सुनने वालों में निराशा फैल गई। आलोचकों ने बताया कि मलयालम के मुख्य शब्दों और खास ध्वनियों का उच्चारण गलत था, जिससे गाने के बोल इतने बिगड़ गए कि उन्हें पहचानना मुश्किल हो गया।

यूजर्स की क्या है अपील?

केरल के सोशल मीडिया यूजर्स ने कई प्लेटफॉर्म पर अपनी नाराजगी जाहिर की और फिल्म निर्माताओं से मुख्य गानों में क्षेत्रीय भाषाओं को शामिल करते समय ज्यादा सावधानी बरतने की अपील की। कई सुनने वालों ने खास तौर पर मलयालम व्यंजन ध्वनियों, खासकर 'ला' (la) अक्षर के अलग-अलग रूपों के गलत उच्चारण की ओर इशारा किया।

तमिल भाषी फैंस ने किया समर्थन

एक्स पर एक लोकप्रिय कमेंट में निर्माताओं से अनुरोध किया गया कि वे गानों या डायलॉग में मलयालम का इस्तेमाल तब तक न करें जब तक कि उसका सही उच्चारण न हो, क्योंकि भाषा से जुड़ी बड़ी गलतियां मूल भाषा बोलने वालों को बहुत अजीब लगती हैं।

अन्य यूजर्स ने सुझाव दिया कि प्रोडक्शन टीम को ऐसे गीतकार और गायक रखने चाहिए थे जो भाषा में माहिर हों ताकि सटीकता बनी रहे। दिलचस्प बात यह है कि कई तमिल भाषी फैंस ने भी इस फीडबैक का समर्थन किया और माना कि जब मुख्यधारा के सिनेमा में अलग-अलग संस्कृतियों के तत्वों को शामिल किया जाता है, तो उन्हें सही ढंग से पेश करना जरूरी होता है।

कब रिलीज होगी 'जेलर 2'?

'जेलर 2' डायरेक्टर नेल्सन दिलीप कुमार की 2023 की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'जेलर' का सीक्वल है। सन पिक्चर्स बैनर के तहत बनी इस फिल्म में रजनीकांत 'टाइगर मुथुवेल पांडियन' के अपने रोल में फिर से नजर आएंगे। फिल्म की स्टार कास्ट में राम्या कृष्णन, योगी बाबू, एसजे सूर्या, मिथुन चक्रवर्ती, विद्या बालन और सूरज वेंजारामूडु शामिल हैं, साथ ही मोहनलाल, शिवा राजकुमार और जैकी श्रॉफ की भी खास भूमिकाएं हैं। 'अला बोलेलो' का पूरा वर्जन 21 अगस्त को रिलीज़ होने वाला था, जबकि 'जेलर 2' दुनिया भर के सिनेमाघरों में 15 अक्टूबर, 2026 को रिलीज होगी।

क्या जल्द बनेगी 'भूल भुलैया 4'?

अनीस बज्मी ने दिया जवाब; अक्षय कुमार को लेकर कही ये बात

भले ही 'भूल भुलैया 4' की चर्चा हो रही हो, मगर अनीस बज्मी का कहना है कि इस फ्रेंचाइजी का अगला पार्ट तभी बनेगा जब टीम को ऐसी कहानी मिलेगी, जो पिछली फिल्मों के लेवल की हो। 'भूल भुलैया 2' और '3' का निर्देशन करने वाले बज्मी कहते हैं कि कार्तिक आर्यन के साथ उनकी अच्छी बॉन्डिंग है, लेकिन सिर्फ एक्टर के होने से ही फिल्म को मंजूरी नहीं मिल जाती।

क्या बनेगी 'भूल भुलैया 4'?

अनीस बज्मी के हवाले से लिखा कि एक और 'भूल भुलैया' बनाना मुश्किल है।

हमने तीसरी फिल्म में अपने लगभग सारे दांव खेल दिए थे।

कार्तिक और मेरी समझ बहुत अच्छी है।

वह बहुत मेहनती अभिनेता हैं। कहानी मायने रखती है।

अगर हमें कोई जबरदस्त कहानी मिलती है, तो हम जरूर फिल्म बनाएंगे।

फिल्म की सफलता का 70% हिस्सा कहानी पर निर्भर करता है।

अक्षय के साथ काम करने पर

क्या बोले अनीस?

अनीस बज्मी विद्या बालन और अक्षय कुमार के साथ अपनी अगली बिना नाम वाली कॉमेडी फिल्म का भी इंतजार कर रहे हैं, जिनके साथ उन्होंने पहले 'वेलकम' फ्रेंचाइजी में काम किया था। वह बताते हैं, 'अक्षय और मैंने 'वेलकम' बनाई थी, जिसे लोग आज भी देखते हैं और पसंद करते हैं। हमारे बीच बहुत प्यार और सम्मान है। हमने साथ में एक और बहुत अच्छी कॉमेडी फिल्म बनाने की कोशिश की है।'

अनीस ने किया 'वेलकम टू द जंगल' का जिक्र

जब वह 'वेलकम' का जिक्र करते हैं, तो 'वेलकम टू द जंगल' का टॉपिक भी आता है, जिसे डायरेक्ट करने के लिए उनसे संपर्क किया गया था। हालांकि उन्होंने फिल्म का निर्देशन नहीं किया। उनका कहना है कि उन्हें टीम से कोई शिकायत नहीं है। वह कहते हैं, 'उस फिल्म से जुड़े सभी लोग मेरे दोस्त हैं, अहमद खान, अक्षय कुमार, परेश रावल और कई अन्य। इसलिए इसे देखते हुए मुझे सच में मजा आया। जब भी कोई मजबूत कहानी लेकर आता है, तो दर्शक उस पर प्यार बरसाते रहते हैं।'

कब रिलीज हुईं 'भूल भूलैया' फ्रेंचाइजी की फिल्में?

आपको बता दें कि 'भूल भुलैया' साल 2007 में रिलीज हुई थी। इसके निर्देशक प्रियदर्शन थे। 'भूल भुलैया 2' साल 2022 में रिलीज हुई थी। इसनके निर्देशक अनीस बज्मी थे। 'भूल भुलैया 3' साल 2024 में रिलीज हुई थी। इसके निर्देशक भी अनीस बज्मी थे। सभी फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा कलेक्शन किया था।

क्यों यूजर्स पर भड़कीं श्वेता तिवारी? राज ठाकरे से पूछा सवाल; मराठी संस्कृति को लेकर कही ये बात

टीवी की मशहूर अभिनेत्री श्वेता तिवारी ने सोशल मीडिया पर महिलाओं के लिए अभद्र भाषा के आम इस्तेमाल के खिलाफ आवाज उठाई है। उन्होंने सवाल किया कि लोग उन महिलाओं को नीचा दिखाने का हक कैसे समझते हैं, जिन्हें वे जानते भी नहीं हैं। 'द ट्रेटर्स 2' की प्रतिभागी श्वेता ने शो के दूसरे कंटेस्टेंट्स के साथ बातचीत के दौरान अभद्र कमेंट्स देखे और फिर इस मुद्दे पर इंस्टाग्राम स्टोरी शेयर की।

श्वेता ने क्या सवाल पूछा?

श्वेता ने बताया कि हाल ही में वह 'द ट्रेटर्स 2' की अपनी को-कंटेस्टेंट पारुल गुलाटी के

साथ इंस्टाग्राम पर लाइव आई थीं और वहां देखे गए कमेंट्स से वह परेशान हो गईं।

उन्होंने लिखा कि आज मैं एक ऐसी बात पर बात करना चाहती हूं जो बहुत चिंताजनक है और दुर्भाग्य से सोशल मीडिया पर बहुत आम है। वह है किसी महिला को अपशब्द कहना।

कौन लोग करते हैं कमेंट?

अभिनेत्री ने यह भी कहा कि ऐसे कमेंट्स हमेशा अनपढ़ या मुश्किल बैकग्राउंड वाले लोग ही नहीं करते। उनके मुताबिक, ऐसी बातें कहने वाले कई लोग पढ़े-लिखे होते हैं, उनके परिवार और करीबी महिलाएं भी होती हैं, फिर भी वे दूसरी महिलाओं के लिए अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करते हैं।

अनजान महिला पर क्यों करते हैं कमेंट?

श्वेता ने खुद पर की गई अभद्र टिप्पणियों के बारे में भी बात की और कहा कि लोग कभी-कभी उनके बच्चों के बारे में भी परेशान करने वाली बातें कहते हैं। उन्होंने कहा कि जब वह ऐसे यूजर्स की प्रोफाइल देखती हैं, तो अक्सर उन्हें उनकी पत्नियों, बेटियों और परिवार के दूसरे सदस्यों की तस्वीरें दिखती हैं।

उन्होंने सवाल किया, 'तो फिर किसी ऐसी महिला का अपमान करना कैसे सही हो सकता है जिसका आपसे कोई लेना-देना ही नहीं है?'

मराठी संस्कृति को लेकर क्या बोलीं श्वेता?

अभिनेत्री ने उन कुछ यूजर्स की पहचान के बारे में भी बात की जो ऑनलाइन महिलाओं को निशाना बनाते हैं। उन्होंने उन लोगों का जिक्र किया जो गर्व से खुद को 'मराठी मानूस' कहते हैं और सवाल किया कि क्या ऐसा व्यवहार उस पहचान से जुड़े मूल्यों को दिखाता है।

श्वेता ने कहा कि वह अपनी पूरी जिंदगी महाराष्ट्र में रही हैं और राज्य व मराठी संस्कृति से उनका गहरा जुड़ाव है। उन्होंने लिखा कि वह इस सोच के साथ बड़ी हुई हैं कि मराठी संस्कृति महिलाओं, उनकी ताकत और सम्मान का आदर करती है।

श्वेता ने राज ठाकरे से क्या सवाल किया?

उन्होंने राज ठाकरे से भी सीधे सवाल किया, 'राज ठाकरे, अगर ऐसे लोग आपके समर्थक हैं, तो मैं सच में जानना चाहूंगी... क्या आपको लगता है कि यह सही व्यवहार है?'

फिल्म 'गांधारी' में दिखेगी मुश्किलों से लड़ती एक मां की कहानी : तापसी पन्नू

तापसी पन्नू की अदाकारी वाली फिल्म 'गांधारी' की रिलीज डेट सामने आ गई है। इश्वक सिंह, छाया कदम, स्वस्तिका मुखर्जी, मीता वशिष्ठ और जतिन सरना मुख्य भूमिकाओं में हैं। इसके निर्देशक देवाशीष मखीजा हैं। जबकि इसकी लेखिका और निर्माता कनिका ढिल्लों हैं।

अपकमिंग फिल्म 'गांधारी' 3 सितंबर, 2026 को नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। एक्शन-थ्रिलर फिल्म दिखाती है कि जब किसी महिला की प्यारी चीजें खतरे में हों, तो वह किस हद तक जा सकती है।इसमें यह भी दिखाया गया है कि

मां के प्यार से ज्यादा ताकतवर कोई चीज नहीं होती। वह अपने बच्चे की सुरक्षा के लिए जो सफर तय करती है, उससे ज्यादा मुश्किल कोई सफर नहीं होता।

क्या है फिल्म की कहानी?

एक काल्पनिक शहर 'जॉयपुरा' की पृष्ठभूमि पर आधारित, 'गांधारी' अटूट विश्वास, शांत सहनशक्ति और अदम्य साहस की कहानी है। कहानी के केंद्र में 'बानी' (तापसी पन्नू) है, एक ऐसी मां जिसकी ममता की परीक्षा हर मोड़ पर होती है। उसे पूरे यकीन और त्याग के साथ अकल्पनीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। तापसी पन्नू के अब तक के सबसे मुश्किल फिजिकल रोल्स में से एक मानी जाने वाली इस फिल्म में जबरदस्त एक्शन के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं का भी गहरा मेल है।

तापसी ने कनिका के साथ दोबारा किया काम

'फिर आई हसीन दिलरुबा' की सफलता के बाद, यह फिल्म नेटफ्लिक्स को कनिका ढिल्लों और तापसी पन्नू के साथ फिर से एक साथ लाती है। लेखिका और प्रोड्यूसर कनिका ढिल्लों ने कहा, 'गांधारी' के जरिए हम एक ऐसी महिला की कहानी बताना चाहते थे, जो अपनी परिस्थितियों से अपनी पहचान तय नहीं होने देती। बानी का सफर बहुत ही सच्चा, कभी न रुकने वाला और बेहद निजी है। इसी बात ने मुझे शुरू से ही उसकी ओर खींचा। तापसी के साथ फिर से काम करना बहुत खास रहा है।'

तापसी पन्नू का वर्कफ्रंट

तापसी पन्नू को आखिरी बार फिल्म 'अस्सी' में देखा गया था। इस फिल्म के निर्देशक अनुभव सिन्हा हैं। यह बॉक्स ऑफिस पर बहुत अच्छा नहीं कर पाई थी। 30 करोड़ की लागत में बनी यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर 13.43 करोड़ रुपये ही कमा सकी थी। आलोचकों से इसे सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली थी।

राजपाल यादव बोले- जिनका पैसा बकाया है, घर पहुंचा दूंगा

कहा- 13 साल में 250 करोड़ का नुकसान हुआ; घर नीलाम कर रहा बैंक

बॉलीवुड एक्टर राजपाल यादव ने चेक बाउंस और कर्ज विवाद के बीच दावा किया है कि पिछले 13 साल में उन्हें 200 से 250 करोड़ रुपए का निजी नुकसान हुआ है। वे एक जिम्मेदार इंसान हैं और जिन लोगों का पैसा बकाया है, वे उसे चुका देंगे या उनके घर तक पहुंचा देंगे। यह बयान ऐसे समय आया है जब सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने 16 करोड़ रुपए का कर्ज न चुकाने पर उनके पैतृक घर की नीलामी का नोटिस जारी किया है। राजपाल यादव ने बताया कि 2013 से 2016 के बीच उनका सबसे ज्यादा आर्थिक नुकसान हुआ। उन्होंने कहा कि इस दौरान विदेश में उनके कम से कम 50 टूर छूट गए और मिलने वाली फीस भी काफी कम हो गई। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि जहां उन्हें 100 रुपए मिलने चाहिए थे, वहां सिर्फ 10 रुपए मिले। हालांकि, राजपाल ने कहा कि वे आर्ट के स्टूडेंट हैं और वे पैसों से ज्यादा अपनी कला में परफेक्शन को अहमियत देते हैं।

'जिनका पैसा बकाया है, घर पहुंचा दूंगा'

अपनी आर्थिक स्थिति और कर्ज पर बात करते हुए राजपाल यादव ने कहा कि उन्होंने जिनसे भी पैसा उधार लिया था, उसे चुका दिया है या जल्द चुका देंगे। उन्होंने कहा कि अगर उन्होंने 200 लोगों से भी उधार लिया है, तो वे पैसा वापस करेंगे।

राजपाल ने कहा कि कोई उन्हें 5 करोड़ या 250 करोड़ रुपए में खरीद नहीं सकता। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी आर्थिक मुश्किलें उनके पूरे करियर को तय नहीं करतीं और आज भी एयरपोर्ट पर 500 लोग उनके साथ सेल्फी लेते हैं।

राजपाल यादव पर सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया का कर्ज न चुकाने के कारण कार्रवाई चल रही है। राजपाल यादव ने सेंट्रल बैंक की मुंबई ब्रांच से पत्नी राधा यादव और मां गोदावरी के नाम पर 16.61 करोड़ रुपए का लोन लिया था।

शाहजहांपुर में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने उनके पैतृक घर पर 16.61 करोड़ रुपए के बकाया लोन को लेकर कुर्की का नोटिस चस्पा किया है।

चेक बाउंस केस में जेल जा चुके राजपाल

राजपाल यादव का चेक बाउंस केस साल 2010 में शुरू हुआ था, जब उन्होंने अपनी फिल्म 'अता पता लापता' बनाने के लिए मुरली प्रोजेक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड से 5 करोड़ का कर्ज लिया था। 2012 में रिलीज हुई यह फिल्म फ्लॉप हो गई। इसके बाद 2013 से चेक बाउंस का मामला अदालत में चल रहा है।

जुलाई में दिल्ली हाई कोर्ट ने कर्ज न चुकाने पर उनकी मंशा पर सवाल उठाते हुए सरेंडर का आदेश दिया था। इससे पहले फरवरी 2026 में भी उन्होंने तिहाड़ जेल में सरेंडर किया था, जिसके बाद वे 12 दिन तक जेल में रहे थे। फिलहाल वे अक्षय कुमार के साथ फिल्म 'हैवान' और सलमान खान के साथ 'SVC 63' की तैयारी कर रहे हैं।

पैसा और प्यार में से किसको चुनेंगी निया शर्मा? टीवी अभिनेत्री ने दिया दो-टूक जवाब

निया शर्मा को टीवी सीरियल 'जमाई राजा' और 'नागिन 4' के जरिए घर-घर पहचान मिली थी। इसके अलावा वह कई रियलिटी शो में भी नजर आ चुकी हैं। हाल ही निया 'लाफ्टर शेफ' के सेट पर नजर आईं। यहां पैपराजी ने उनसे सवाल किया कि वह प्यार और पैसे में से किसे चुनेगी? इस पर क्या रहा अभिनेत्री का जवाब, जानिए?

पैसे और प्यार में से निया ने किसे दी अहमियत?

पैपराजी के सामने निया शर्मा नारंगी रंग के सूट-सलवार में आईं। वह 'लाफ्टर शेफ' का एपिसोड शूट करने आई थीं। इस सेट पर उन्होंने पैपराजी को कहा, 'वह प्यार और पैसे मे से पैसे को चुनेंगी।' वह आगे कहती हैं, 'वह हमेशा पैसे को ही चुनेंगी।'

फैंस ने अभिनेत्री के जवाब पर क्या प्रतिक्रिया दी?

जब फैंस ने निया शर्मा जवाब सुना तो कई सोशल मीडिया यूजर्स ने उन्हें सही बताया। इसके अलावा कुछ फैंस ने निया के लुक को सराहा और हार्ट इमोजी शेयर किए। निया शर्मा की इंस्टाग्राम पर अच्छी खासी फैन फॉलोइंग है। उनके लगभग 8 मिलियन से अधिक फॉलोअर्स हैं।

क्या होगा निया शर्मा का अगला प्रोजेक्ट?

'नागिन 4' में निया शर्मा ने लीड रोल किया था। अब तक इस टीवी शो के सात सीजन आ चुके हैं, जिनमें मौनी रॉय के अलावा, सुरभि ज्योति, सुरभि चांदना, अदा खान, तेजस्वी प्रकाश और प्रियंका चाहर चौधरी ने लीड रोल किए थे।

बीते दिनों इस शो की प्रोड्यूसर एकता कपूर ने एक वीडियो में सभी अभिनेत्रियों की झलक दिखाई है। साथ ही बताया कि वह इसे टीवी से आगे लेकर जाना चाहती हैं। हालांकि, एकता कपूर ने यह स्पष्ट नहीं किया है कि वह 'नागिन' पर कोई फिल्म बनाएंगी या वेब सीरीज।

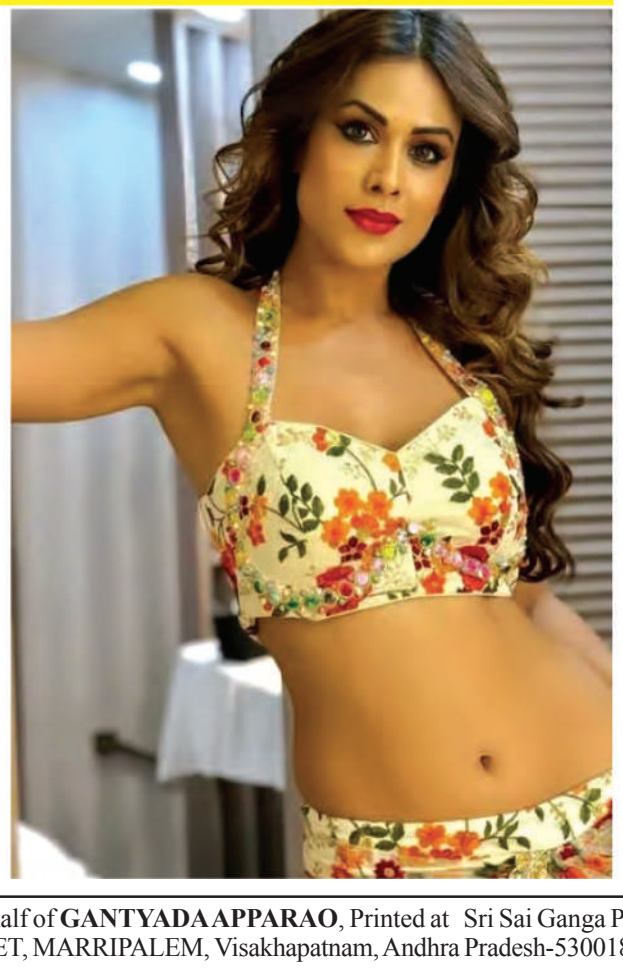

शर्मिला टैगोर से कंगना बोलीं- हिंदू-मुस्लिम सोच से बाहर आइए

शर्मिला ने कहा था- वंदे मातरम के 2 अंतरे अच्छे

एक्ट्रेस शर्मिला टैगोर की वंदे मातरम पर टिप्पणी के बाद कंगना रनोट ने प्रतिक्रिया दी है। कंगना ने सोशल मीडिया पर कहा कि हिंदू-मुस्लिम सोच से बाहर आइए। एक कलाकार के तौर पर मैं हैरान हूं कि कला और कविता को लेकर उनकी सोच इतनी छोटी और बनावटी कैसे हो सकती है। शर्मिला टैगोर ने कहा था कि वंदे मातरम के कुछ हिस्से एक ईश्वर को मानने वाले लोगों की आस्था से मेल नहीं खा सकते। गीत में कई देवताओं का जिक्र है। इस गीत के दो अंतरे ही अच्छे हैं।

कंगना बोलीं- कलाकार असंभव लगने वाली समानताएं खींचता है

कंगना ने शर्मिला टैगोर के इंटरव्यू का वीडियो अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर शेयर किया। उन्होंने लिखा, 'मैं खुश हूं कि शर्मिला जी ने वंदे मातरम को लेकर अपनी आपत्ति के बारे में बात की। किसी भी कविता या गीत में शब्द रूपक होते हैं। कवि या कलाकार मनचाहा असर पैदा करने के लिए हर तरह की कल्पना करता है और असंभव लगने वाली समानताएं खींचता है। विवेकानंद ने कहा था कि मुझे ऐसे युवा चाहिए, जो लोहे जैसे बने हों, जिनकी हड्डियां फौलाद की हों और जिनकी नसों में बिजली दौड़ती हो। विवेकानंद मौसम का अनुमान नहीं बता रहे थे। वह केवल शक्ति को जगाने की मांग कर रहे थे। कृपया हिंदू-मुस्लिम सोच से बाहर आइए।

भले ही हम एक ईश्वर में विश्वास करते हों, डॉक्टर भी ताकत को शक्ति कहते हैं। आइए, एक-दूसरे को अपनों की तरह अपनाएं। मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं और उस जोरदार तरीके से गले मिलने से भी मुझे परेशानी नहीं है, जैसे आप हमेशा मिलती हैं।'

शर्मिला ने कहा था- एक ईश्वर को मानने वालों के लिए मुश्किल

शर्मिला टैगोर ने कहा, 'बहुत से धार्मिक लोग एक ही ईश्वर में विश्वास करते हैं, कई ईश्वरों में नहीं। वंदे मातरम में एक अंतरा है, जिसमें कई देवताओं का जिक्र है।जो लोग एक धर्म, एक ईश्वर में विश्वास करते हैं, उनके लिए 'वंदे काली, वंदे दुर्गा' कहना मुश्किल है। अगर हम भारत के सभी धार्मिक लोगों को साथ लेकर चलें तो वंदे मातरम पहले दो अंतरे बहुत अच्छे हैं।' हालांकि, शर्मिला टैगोर ने अब तक कंगना के कमेंट पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। कुछ महिलाएं यौन संबंधों को आजादी बताती हैं- कंगना ने पोस्ट में लिखा था, 'पश्चिमी सोच से प्रभावित भारतीय महिलाओं की एक नई पीढ़ी सामने आई है। इनमें से कुछ के पास समाज को देने के लिए कुछ नहीं है। वे अच्छी गृहिणी बनने के लिए भी सक्षम नहीं हैं। इसके बावजूद वे अपनी आजादी का दिखावा करती हैं। नशा, शराब और अनगिनत यौन संबंधों को अपनी आजादी बताती हैं।'

Printed and Published by **GANTYADA APPARAO** on behalf of **GANTYADA APPARAO**, Printed at Sri Sai Ganga Printers and Publishers Flat No: 504, Bharat Towers, 5th Lane, Dwaraka Nagar, Visakhaptanam, Andhra Pradesh-530016, and Published at H.NO: 38-4-216, MAHARANI STREET, MARRIPALEM, Visakhapatnam, Andhra Pradesh-530018, **Editor: GANTYADA APPARAO.** Mobile : 9059465965, **RNI : APHIN/26/A3657**, editorpenpower@gmail.com